लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

लीला सुधा सिन्धु

(पद्य रामायण)

ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

लीला सुधा सिन्धु (पद्य रामायण)

रचयिता :

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :

प्रकाशन विभाग

श्री रामहर्षण कुंज,

परिक्रमा मार्ग,

अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७

तृतीय आवृत्ति : ११००

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :

डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सद्नम कॉम्पलेक्स,

धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०

दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९

श्री गुरुः शरणम्

आमुख

वेद-वेदान्त-वेद्य ब्रह्म अज, अलख, अनीह, अनाम, अरूप, अनवद्य एवं अवाङ्मन गोचरादि आदि विशेषणों से विशिष्ट श्रुति-शास्त्रों द्वारा निरूपित किया गया है। वह अव्यक्त सत्ता स्वतः सर्वतः एवं सर्वदा पूर्ण है, उस पूर्ण सत्ता से पूर्ण निकाल लेने पर पूर्ण ही अवशेष रहता है। तात्पर्य यह कि वह पूर्णतम समस्त अपेक्षाओं से विहीन है और यही कारण है कि उसके उपासक भी व्यपगत सकलापेक्षा हो जाते हैं।

किन्तु, यथा भास्वान् सहज ही प्रभामय, वारि द्रवत्वमय तथा वायु प्रवाहमय है, उसी भांति वह ब्रह्म भी लीलामय है; यथा सहज ही परिपूर्ण पारावार के प्रशान्त वक्ष पर अनन्त तरंग मालिकाओं का सतत विलास होता रहता है, उसी भांति उस सच्चिदानन्दमय ब्रह्म की हृदयस्थली में अनन्त-अनन्त लीलाओं के कल्लोल सहज ही उठते रहते हैं। उस ब्रह्म की लीलायें मुख्यतया तीन प्रकार की हैं- अक्षर लीला, वास्तविक लीला तथा व्यावहारिक लीला। इस त्रिविधात्मिका लीला का प्रथम विकास उस अक्षर ब्रह्म के हृदय में होता है, अतः उसे अक्षर लीला कहते हैं, किन्तु जहाँ तक उस महामहिम्न की द्वितीय प्रकार की लीला (वास्तविक लीला) का सम्बन्ध है वह एकाकी संभव नहीं है। अतएव "स एकाकी न

रमते, स द्वितीयमिच्छति'' द्वितीय अर्थात उसे लीला परिकरों की आवश्यकता अनुभूत होती है और यह लीला उनके पराधाम ''साकेत'' में सम्पन्न होती है। यह लीला भी सर्व सुलभ नहीं है।

तृतीय प्रकार की लीला इस व्यावहारिक जगत में उस ब्रह्म के परम सौन्दर्य, सौकुमार्य, लावण्य एवं सौलाभ्यादि गुणों से विलसित भुवन-मोहन-वपुष नरावतार विग्रह के साथ धराधाम श्री अयोध्या में स्वजन हिताय तथा रसिक जन सुखाय होती है अतएव इसे ''व्यावहारिक लीला'' के नाम से व्यवहृत करते हैं। मुख्यतया यही लीला आचार्य श्री के परम पावन ग्रन्थ ''लीला-सुधा सिन्धु'' का प्रतिपाद्य विषय है।

ब्रह्म रसमय है अतः तदंशभूत जीवात्मायें भी रसमय है। ''रसो वै सः रसं ह्येवाऽयं लब्ध्वाऽनन्दी भवति'' अतः वह स्वयं आनन्दमय होकर अपने परम प्रेमी भक्तों को परमानन्द का आस्वाद् प्रदान करते रहते हैं। यह वह लीला-त्मक परमानन्द है, जिसके हेतु जीवन्मुक्त ब्रह्मपरायण ब्रह्मज्ञानी भी सदैव लालयित रहते हैं तथा स्वलक्ष्यभूत परम प्रेम ब्रह्म परिज्ञान को उसका फल मानते हैं। इस लीला में रत उन लीला-वतार के मधुर दर्शन में उस परमोत्कृष्ट सुख की समनुभूति होती है, जिसके समक्ष बड़े-बड़े ब्रह्मविद वरिष्ठ ब्रह्मसुख को न्यौछावर कर देते हैं, तथा विरक्त से अनुरक्त और आसक्त बन जाते हैं, इस सन्दर्भ में श्री रामचरित-मानसान्तर्गत श्री विदेह जी की स्थिति दर्शनीय है। उन लीलामय की छबि का यही दर्शन ही तो नेत्रधारियों के नेत्रों का परम फल है।

बस यही कारण है कि हमारे मनीषियों एवं प्रेमाचार्यों ने अपने प्रबन्धों में प्रभु की लीलाओं का बार-बार भूरि-भूरि गान किया है और करते आ रहे हैं।

इसी उद्देश्य-विशेष से प्रेरित होकर प्रेमाचार्य आचार्य श्री ने प्रस्तुत ग्रन्थ-रत्न ''लीला-सुधा-सिन्धु'' का प्रणयन किया है। ''लीला-सुधा-सिन्धु'' वस्तुतः लीला सुधा का सागर ही नहीं अपितु महासागर है, जिसमें षड् लीलाओं का पावन रस-विलास सतत सर्वत्र परिलक्षित होता है। रसिक-जन आत्मा तथा मानस के हेतु इसमें अनेक रागों से रंजित पदावलियों की षोड़श-शत रत्नराशि सन्निहित है, जिसका एक-एक अमूल्य रत्न प्राप्त हो जाने पर (तदनुरूपा धारणा हो जाने पर) उस लीलामय शाहंशाह तथा उनके साम्राज्य साकेत को खरीद लेने हेतु पर्याप्त है।

यह ग्रन्थ भाषा शैली का अपूर्व ग्रन्थ है। इसमें भगवान श्रीराम एवं श्री जानकी जू की बाल, विवाह, रास, वन, रण, एवं राज्य इन षड् लीलाओं तथा इनकी अवान्तर लीलाओं की मधुमय झाँकी दर्शनीय हैं। इसके अन्तर्गत प्रभु की गुप्त तथा प्रकट, ऐश्वर्य एवं माधुर्यमयी ऐसी लीलाओं का चित्रण है जिनके कि कुछ सूत्र ग्रन्थों में सुलभ हों किन्तु अधि-कांश आचार्य श्री के अन्तराल में अनुभूत लीलाओं का वर्णन है, जो सर्वत्र सुलभ नहीं है। यह चित्रण अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। रसिक संगीतज्ञों के हेतु अनेक राग एवं रागिनियों से बद्ध तथा भगवान के सभी उत्सवों अर्थात् जन्म, बधाई, लोरी, बाल-सुलभ क्रीड़ा, विवाह, रास, वसन्त, होली, झूला, जल विहार

आदि आदि अवसरों के हेतु प्रभूत मात्रा में अति मनोरंजक एवं आत्मरंजक सामग्री उपलब्ध हैं। इसमें श्री विदेहराजनन्दनी जी के भी जन्म एवं बाल क्रीड़ाओं का विस्तृत मधुर वर्णन किया गया है।

भावों की गहनता, नवीनता तथा स्वाभाविकता अपने मौलिक रूप में अवतरित हुई है। पदों में ग्रन्थ प्रणेता आचार्य श्री की भाव विभोरता स्थल-स्थल पर व्यंजित होती है। बाल क्रीड़ाओं के वर्णन में स्वयं साथ में क्रीड़ा करते हुए तथा विवाह उत्सव के चित्रण में स्वयं उनकी आत्मा प्रविष्ट सी प्रतीत होती है।

भाषा माधुर्य एवं प्रसाद गुणों से यथास्थल अनुकूल बन पड़ी है। अवधी बघेलखण्डी तथा मैथिल भाषाओं का सफल प्रयोग दर्शनीय है। विवाह के अवसर पर मैथिल भाषा का स्वाभाविक प्रयोग व्यक्त करता है कि ग्रन्थकार की मैथिल आत्मा मुखरित हो उठी है। छंद एवं अलंकारों की छटा निसर्गतः अद्‌भूत है। निष्कर्षतः ग्रन्थ, हिन्दी भाषा की एक अनुपमेय कृति है। जिसकी अपूर्व सुखप्रदता तथा प्रियता का अनुभव प्रभु लीला-रस-रसिक महानुभाव स्वयं अनुभव करेंगे।

प्रेमाचार्य की पावन कृति के सम्बन्ध में कुछ विचारव्यक्तिकरण मुझ जैसे पामर जीव के लिये अशक्य एवं असम्भव है। उनकी आज्ञा का निर्वाह करते हुए श्री चरणों में अनन्तशः प्रणिपात के साथ कृपा भीख याचित है।

श्री चरण-कंज-रज-चंचरीक

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज

अनुक्रमणिका

अनुक्रमांक	प्रसंग	पृष्ठ क्रमांक
२३	अवध में वन विहार	४१६
२४	सरयू तट क्रीड़ा	४२१
२५	नव दम्पति की फूल बंगला-झाँकियाँ	४२२
२६	अयोध्या में सरयू-जल विहार	४२६
२७	अयोध्या में गुरु पूर्णिमा	४३१
२८	अयोध्या में झूलनोत्सव	४३३
२९	बन विहार व शरद रास	४६२
३०	रासान्तर्गत युगल लीला	४७६
३१	अवध में विवाहोत्सव अभिनय	४८९
३२	अवध में फागुन-होरी	४९०
३३	अवध में युगल झाँकी	५०१
३४	वन लीला	५७८
३५	रण लीला प्रकरण	६६८
३६	राज लीला प्रकरण	७०६

******

श्री राम जन्म बधाई

(१)

तोरी कोख सुफल भै आज, कौशिल्या माई।
वेद वेद्य वर ब्रह्म अगुण अज, प्रगट सगुण भल भ्राज।
मन्मथ मोहन मधुर मधुर मधु, श्याम सुवन सुख साज।
प्रीति परख परवस परमेश्वर, अनुपम अंक विराज।
विधि हरि हर सुर व्यौम विमानन, मुदित प्रशंसत आज।
सुर तरु सुमन सुअंजुलि सजि सजि, वर्षत दुंदुभी बाज।
देव नारि नृत्यत नभ गावहिं, जय जय जय रव राज।
हर्षण प्रभु जन हित भुवि आयो, अधम उधारन काज।

(२)

आज अवधपुर बजत बधइया।
चैत मास सित पक्ष नवमि तिथि, अभिजित नखत सुहइया।
योग लग्न ग्रह वार सुखद सब, मध्य मधुर दिन रइया।
शीतल मन्द सुगंध वायु बह, पंच तत्व छबि छइया।
सुर मुनि सिद्ध प्रशंस सुमन झरि, दिवि दुंदुभी बजइया।
जय जय उचरत मोद मगन है, त्रिभुवन हर्ष हलइया।
ताही समय कौशिला जायो, सुवन सुभग सुख दइया।
शिशु मुख निरखि मोद मन माता, आनँद हिय न अमइया।
पुत्र जन्म सुनि श्रवण नृपति–गुरु, निरखे आय अघइया।

रूप राशि सुख सिन्धु सुधामय, प्रभा अमल अधिकइया।
प्रमुदित करि नन्दी मुख श्राद्धहिं, जात कर्म करवइया।
कनक वसन मणि धेनु द्विजन दै, सरबस सबहिं लुटइया।
मृग–मद चंदन कुंकुम केशर, बीथिन इतर सिंचइया।
दधि दूर्वा तुलसी दल अक्षत, कनक थार रूचि रइया।
भरि नव रत्न चलीं नव नागरि, कनक कलश शिर लइया।
झुण्ड झुण्ड प्रविशहिं नृप मन्दिर, अनुपम छबि छहरइया।
कोकिल कण्ठ सोहिलों गावहिं, सुख की बाढ़ बढ़इया।
लखि लखि बाल आरती करि के, पुनि पुनि लेहिं बलइया।
करि निउछावरि नाचहिं गावहिं, धनि धनि अवध लोगइया।
हर्षण नभ नव नगर महानँद, भूमा सुख सरसइया।

(३)

घर घर बजत बधाव, अवधपुर भाई।
रानि कौशिला कोख प्रगट भे, ब्रह्म वेद जेहि गाव।
तोरन ध्वज पताक मणि चौकें, कनक कलश दरशाव।
सोहिल सुखद स्वरहि सरसायो, बाजन विविध बजाव।
अतर अरगजा चोवा चंदन, दधि केशर छिरकाव।
नगर नारि नर नाचहिं गावहिं, अंग अमित पुलकाव।
विप्र वेद वद बन्दी विरदहिं, भाँड़ स्वाँग करि चाव।
हर्षण सुमन वृष्टि नभ होवति, सब सरबसहिं लुटाव।

(४)

सखि सुख सिन्धु अधिक अधिकायो री।
केकइ एक सुमित्रा दुइ सुत, श्याम गौर वपु जायो री।
मन मोहन मधुमय सुठि सुन्दर, अंग अंग छबि छायो री।
जन्म महोत्सव सुर मुनि नागहिं, अचरज आनँद आयो री।
नभ अरु नगर बधावा बाजत, अह मम सबहिं भुलायो री।
सुर वर वाम नगर नव नारी, हिलि मिलि सोहिल गायो री।
दशरथ भाग भली विधि वर्णत, सुरन सुमन झरि लायो री।
हर्षण हर्ष सुमंगल गावत, आनँद उर न अमायो री।

(५)

आज अवधवा में आनँद होय हो मोरी गुइयाँ ।
सुर सब चढ़े विमानन आये, निज निज नारि संग में लाये
गगन कोलाहल होय। हो॥
वर्षे सुमन जयति जय उचरें, देत दुंदुभि चोट को चतुरे,
मोद मगन लख लोय। हो.॥
वेद वेद्य पर ब्रह्म महाना, शंभु भुसुंडि धरैं जेहि ध्याना,
प्रगट्यो नृप घर सोय। हो.॥
शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ, भक्तन हिय बहु बाढ्यो भाऊ,
सुर मुनि सुख को जोय। हो.॥
सब मिलि के गर्भ स्तुति कीन्हे, भक्तन के भगवान को चीन्हे,
त्रिभुवन के सब कोय । हो.॥

चमत्कार्य मय जन्म उछाहा, भयो कहै को अनँद अथाहा,
दुःख दोष गयो खोय। हो.॥
प्रेम मगन नृप–रानि प्रकाशी, भौमा सुख के भये विलासी,
हर्ष राम रस मोय। हो.॥

(६)

सोहिल सुखद सुहान, सखी शुचि सोहिल हो।
त्रिभुवन हर्षि भुलान, महामुनि मोहिल हो।
धनि धनि दशरथ राउ, रानि धनि कौशिल हो।
अगुणहिं सगुण बनाय, श्याम शिशु शोभिल हो।
आनँद दश दिशि आज, कहैं कवि कोहिल हो।
जड़ भे सब चैतन्य, अजड़ जड़ जोहिल हो।
रवि रमि रथ कहँ रोकि, लख्यो सुख सोहिल हो।

(७)

महरानी तेरो अनँद अपार हो।
सुन्दर श्याम सुखद सुत जायो, जेहि को वेद ब्रह्म कहि गायो,
मदन विमोहन हार हो.।
तिहरो अनँद कहै को पारी, शेष शारदा माने हारी,
जय जय रहे उचार हो.।
सुर नर नाग त्रिलोक निवासी, आये परमानंद उपासी,
विहरत अवध मझार हो.।

विधि हरि हरहु लिये निज नारी, जन्मोत्सव लखि भये सुखारी,
भूले अपुन अगार हो.।
लीला लखतहिं भानु भुलाये, मास दिवस को दिवस बनाये,
सके न सुखहिं सम्हार हो.।
नभ अरु नगर बाधावा बाजत, पंच धुनी घर घरन विराजत,
नृत्यहिं नइ नइ नार हो.।
मंगल द्रव्य लिये सुर नारी, आय रहीं हर्षण तव द्वारी,
धनि धनि भाग तिहार हो.।

(८)

धनि धनि दशरथ महाराजा, भाग की बलैया लेवौं।
राम लखन अरु भरत शत्रुहन, पाये सुत सुख साजा।
तुम सम भयो न होनेउ कबहूँ, भूपन के सिर ताजा।
सुरनर नाग प्रशंसत अहनिसि, जय जय करत अवाजा।
त्रिभुवन आनँद वर्धन हेतुहिं, अवध पुरी भल भ्राजा।
जन्म उछाह मनावन आये, सुर नर मुनिन समाजा।
जस सुख भयो शेष नहिं वरणैं, अमृत सिन्धु विराजा।
हर्षण करत प्रणाम सहस्त्रन, तव पद प्रमुदित आजा।

(९)

मास दिवस को द्यौस, भयो छन छोहिल हो।
शिव सह काग भुशुण्ड, अवध पथ लोभिल हो।

विचरहिं मगन महान, अनन्द टटोहिल हो।
सुर किंन्नर गंधर्व, तियन सह मोहिल हो।
नभहिं नृत्य करि गान, दुंदुभी छोभिल हो।
वर्षहिं सुमन अपार, जयति जय ओहिल हो।
तैसहिं भूमि भुआर, पंच धुनि बोहिल हो।
चन्दन छिरक गुलाल, इत्र दधि दोहिल हो।
बन्दी मागध भाँट, विदूषक जोहिल हो।
करहिं कला भल भाँति, हर्ष हिय होहिल हो।
बहु विधि धनहिं लुटाव, सबहि सब टोहिल हो।
उत्सव जन्म मनाव, त्रिजग भल भोहिल हो।
आनँद हर्षण छाम, मगन मन मोहिल हो।

(१०)

अलि आज बधइया बाजी रे।
महि-महिसुर-शुचि-संत-सुरभि सुर, मोद मगन मन भ्राजी रे।
दीनबन्धु प्रणतारत हारी, व्यापक ब्रह्म विराजी रे।
कोख कौशिला प्रगट भये हैं, श्याम वपुष सुख साजी रे।
त्रिभुवन जन्म महोत्सव छायो, आनँद आनँद आजी रे।
ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति सह, नभ विमान छबि छाजी रे।
सुर झरि सुमन बजाय निसानहिं, जयति जयति जय गाजी रे।
नृत्य गान करि कुंकुम केशर, वर्षहिं हर्षण काजी रे।

(११)

नइ नइ नारि नवेली, लखोरी आली।
भूपति भवन भाव भरि भूली, राजि रहीं अलबेली।
शची शारदा रती रमोमा, सुरतिय सहित सहेली।
प्रगट भईं मोरे मन आवत, दरशन शिशु सुख केली।
नृत्यहिं गावहिं भाव बतावहिं, मधुर मधुर रस मेली।
रक्षा मंत्र पढीं पुनि मंगल, बढ़ै वंश वर वेली।
बिनु पहिचान पाइ बहु स्वागत, सुख–सुख सनी सुभेली।
हर्षण हिय पुलकहिं हुलसावहिं, शिशु मुख निरखि नवेली।

(१२)

चलो सखी नाचैं गावैं आनँद अघइया।
कौशिल्या जू की कोख सुफल भै, जाये जनक जमइया।
घर घर सबहिं सोहिलो गावैं, बाजै बृहद बधइया।
मंगल थार लिए पुर भामिनि, कनक कलश शिर लैया।
राज भवन प्रविशहिं मन मोदित, मनहु महानिधि पैया।
सब कोउ सर्वस अपुन लुटावत, रहा न कोउ लेवैया।
प्रेम पगे सब सबहि भुलाये, नाचै लोग लोगैया।
वरषि पुष्प सुर जय जय उचरत, हर्षण हिय हरषैया।

(१३)

लै लै बधावा अवध नेगहारी।
पहुँचे मिथिला महल मुदित मन, सुन्दर समय विचारी।

नृत्य-गीत वर वाद्य स्वाँग सजि, दीन्हे खबरि पियारी।
कौशलेश सुत चार भये हैं, श्याम गौर सुख सारी।
सुनि प्रिय वचन फूल नृप रानी, माने मोद अपारी।
मन भावत बकसीस दिये हैं, सो लहि जयति उचारी।
राम जन्म उत्सव बहु विधि ते, किये नृपति सब वारी।
हर्षण आनँद सिन्धु समाये, जनक पुरी नर नारी।

(१४)

अबहिं अबहिं हौं आई अवध नगर ते।
सुभग सुनयना निमिकुल रानी, सुनहु खबरि मन भाई, सबहिं बिसर ते।
रघुकुल की मोहि ढाढ़िन जानहु, लै बधाव इत आई, जगर मगर ते।
श्याम सुखद सुत जन्यो कौशिला, तिमि इक केकई माई, निजी जठर ते।
गौर वर्ण द्वै पुत्र सुमित्रा, सुन्दर सुखमय जाई, सुभग उदर ते।
सुनि सुख मानि जनक की जाया, दिय भूषण पुलकाई, प्रीति पगर ते।
औरहु द्रव्य वसन बहुतायक, भावत ढाढ़िन पाई, बिना झगर ते।
हर्षण जय जयकार करति सो, रोम रोम पुलकाई, गवनी नगर ते।

(१५)

बाजी बाजी बधाई गहागह आज, सोहिल सुखद सुहायो।
चैत मास नवमी तिथि लोनी, योग लग्न ग्रह वार सुभौनी,
जाई जाई कौशिल्या सुवन सुख साज, निरखत चित्त चुरायो॥
देव बजावहिं गगन नगारा, वर्षहिं सुमन प्रमोद अपारा,
नाचीं नाचीं सुनारी विमानन गाज, जय जय शब्द सुहायो॥

तैसहिं भूमि पंच धुनि भ्राजी, दान विविध विधि सुत सुख काजी,
देवैं देवैं अपारा अवध महाराज, आनँद हिय न समायो॥
कुंकुम केशर उड़े अपारी, अस्त भयो जनु साम तमारी,
माची माची दही की कीच भुँई भ्राज, हर्षण मंगल गायो॥

(१६)

बाजत अनँद बधाई हो रामा नृप के नगर में।
कौशिल्या केकई सुमित्रा, जनी पुत्र सुखदाई।
सुन्दर श्यामल गौर वपुष के, कोटिन काम लजाई।
सुर मुनि सिद्ध प्रशंसत नृप कहँ, शिशुअन के गुणगाई।
मंगल थार लिये तहँ भामिनि, जाय रहीं चित चाई।
हमहु अबहिं मिलि के सब गोइयाँ, नृप गृह चलैं सुहाई।
बाल दर्श करि लहहिं जन्म फल, नाच गाय सुख पाई।
हर्षण धन्य भूप अरु रानी, जे अस सुवन खेलाई।

(१७)

बाजत अनँद बधाई हो रामा, डगर डगर में।
नृप गृह प्रगटे सुवन सुहावन, श्याम वपुष सुखदाई हो रामा।
कौशिल्या की कोख धन्य कहि, सुर समूह गुण गाई हो रामा।
वर्षत सुमन जयति जय उचरत, दुंदुभि रहे बजाई हो रामा।
पुर वासी सब मिलहिं परस्पर, हर्ष न हृदय समाई हो रामा।
वरषि अबीर कुंकुमा केशर, दधि की कीच मचाई हो रामा।
प्रेम पगे नर नारी नृत्यत, सरवस सबहिं लुटाई हो रामा।

हर्षण राज भवन को आनँद, वरणि कौन विधि जाई हो रामा।

(१८)

चलो चलो री विलोकि आवैं रानी को लालनमा।

सुन्दर श्याम सहज सुखदायक, वारहिं काम विधुहु बहुतायक,
देखि देखि के जीव जुड़ावैं, जीवन को जीवनमा।।
कनक कलश लै मंगल थारी; गावत सोहिल पहुँचे द्वारी,
भूप भवन में लाड़ लड़ावै, लोचन को लोभनमा।।
देखहु व्योम विमान सुहावैं, विबुध पुष्प बहु विधि बर्षावैं,
पुनि पुनि दुंदुभि वाद्य बजावै, श्रवणन को सोहनमा।।
विप्र वेद विरदावलि बन्दी, उचरत जय जय लोग अनन्दी,
बजत बधाव सुमंगल भावै, राजा के आँगनमा।।
भाँड विदूषक नट नेगहारी, पाये द्रव्य रुचिहु ते भारी,
भूपति कोष खोलाय लुटावै, सर्वस दान द्विजनमा।।
धूप धूम भरि दश दिशि छायो, अबिर गुलाल उड़त अरुणायो,
संध्या समय समान सुहावै, यद्यपि सूर्य गगनमा।।
हर्षण हर्षि हृदय नर नारी, नाचै तन की दशा बिसारी,
प्रियतम प्रेम पगे दरशावै, मोहेउ मन को मोहनमा।।

(१९)

कौशला बनि पुरियन सिर मौर, छबी छहराय रही चहुँ ओर।
नृप गृह भए चार सुत सुन्दर, श्याम गौर सुख धाम वपुष वर,
आनँद बढ़ेउ अथोर।

गृह गृह वंदनवार बँधाये, सुन्दर ध्वज पताक फहराये,
बजत बधाव विभोर।
पूरे मणिन चौक प्रति द्वारा, कनक कलश साजे शुभ चारा,
सोहेउ सोहिल शोर।
त्रिभुवन ते तिय वृन्द सलोनी, लखि लखि लालन लाड़ लड़ोनी,
जावहि सुख में बोर।
ऋषि मुनि देव आइ नृप द्वारे, करि प्रणाम निज थलहिं सिधारे,
भूले मैं तैं मोर।
शीतल मन्द सुरभि बह वायू, निर्मल जल थल गगन जनाऊ,
प्रकृति प्रभा चित चोर।
वर्षहिं सुरन सुगंध सुफूला, उत्सव माच्यो भूमि अतूला,
हर्षण आनँद ठौर।

(२०)

राजा जू के आँगने री बधइया बाजै।
पुत्र जन्म उत्सव अति आनँद, आढ़यो बहुती भागने री।
छठी दिवस कुल रीति कीन्ह सब, रात दिवस लव लागने री।
विविध बाजने बजत मधुर मधु, सोहिल सुखकर रागने री।
गायक गुनी बिदूषक निज निज, करहिं कला कल पागने री।
नचहिं अपसरा नारि नगर की, बीती रजनी जागने री।
भूमि अकाश अनन्द अथाही, देव मुनी नर नागने री।
पुष्प-इत्र-घन वर्षत सबहीं, हर्षण हर्षित मागने री।

(२१)

सुदिन सुखदायक आजु अली।
पुर–वासिन सह राउ रानि की, सब विधि भाग भली।
बरहौं उत्सव उर उमगायक, आनँद गली गली।
लोक वेद कुल रीति कराये, गुरु गृह आय भली।
नामकरण कीन्हे सब शिशुअन, सुख सरि उमँग चली।
सुख सागर कौशिल कुमार जो, वारिद वरण बली।
राम नाम मधुमय भल दीन्हेव, जेहिं जप योगि ढली।
श्याम वपुष केकई कुमारहि, भरत सुभूमि पली।
लखन शत्रुहन सुवन सुमित्रा, सुवरण चंप कली।
धरे नाम लहि नेग अमित मुनि, शिशु लखि आस फली।
नृप दिय दान विप्र बहु पूजी, प्रिय धुनि पंच भली।
हर्षण हर्षित नगर नारि नर, नृत्यत अवध थली।

(२२)

सुभग सब सोहहिं आजु अहो।
कौशिल्या केकई सुमित्रा, पर परमार्थ लहो।
निज निज अंक स्वपुत्रहिं लीन्हे, मोदित मनहिं महो।
नाम धरे गुरु उर विवेक करि, आनँद अमित बहो।
सुर चढ़ि व्यौम विमान विलोकहिं, उत्सव गहा गहो।
झरि झरि सुमन निशान बजावहिं, जय जय जयति कहो।

नरपति महा भोज करवायो, गो-धन दान अहो।
जड़ चेतन हर्षित हिय हर्षण, मंगल शिशुन चहो।

(२३)

देश के भूपति आय जुरे।
लै लै भेंट कहै को पारी, भरे उछाह पुरे।
तैसहिं धनिक वर्ग धन वर्षत, मेह समान ढुरे।
मणि गण वसन भूमि भल भ्राजत, याचक लेन मुरे।
जो पायो सोऊ नहिं राख्यो, दीन्हेव दान दुरे।
राम निछावरि जानि भाव भरि, देव कबार कुरे।
दशरथ दिये सबहिं को सरबस, तदपि भँडार पुरे।
हर्षण चमत्कार मय आनँद, त्रिभुवन लख्यो लुरे।

(२४)

झुलावती मन मुदित पलना।
मातु महलन सोह श्री सम, लालती लघु ललित ललना।
पेखि परम प्रिय शिशु सुठि सुन्दर, पागती प्रिय नयन चलना।
दीठि-भीति जब उर महँ प्रविशति, झाँपती दोउ दृगन झलना।
तृण तोरि लेती बहु बलैया, देवती मसि बिन्दु भलना।
बिनहिं लखे लोचन ललचावत, दूखती तन तनिक कलना।
स्वे स्वे सदन स्व शिशु कहँ प्यारहिं, हेरती हिय हरषि हलना।
हर्षण सुमिरि हृदय हर्षावत, लाल को लखि परे पलना।

(२५)

पालने को कहु कौन बनायो।

मणिमय जटित रत्न नव शोभित, किंकिणि कलित झुमायो।

मनहु मदन सुतहार हाँथ निज, रचि रूचि छबि छहरायो।

ब्रह्म सृष्टि त्रिभुवन सह ईशन, लखि अति अचरज आयो।

भानु तेज वारहुँ तेहि ऊपर, जेहिं शिशु राम रमायो।

पौढ़े राम लखत मुख मणियन, किलकत मधुर मोहायो।

पाणि पाद संकोचि उछारहिं, महा मोद मन भायो।

हर्षण निरखि मातु हिय हर्षति, आनँद हिय न अमायो।

(२६)

शिशु सुभग सोवत पालने।

श्री कौशिल्यानन्द प्रवर्धन, मन मोहन भल भालने।

जाग परे पुनि रुदत श्रवण सुनि, दौरि मातु लिय लालने।

दूध पिआइ प्यारि पुचकारी, बहुरि परायो पालने।

किलकत हँसत मातु मुख पेखत, उछरि उछरि वर बालने।

पैर पीटि इत उत लखि खसकत, अम्ब सम्हारति हालने।

गाय मधुर मधु लोरी झुलवति, लाल लुभाई चालने।

हर्षण सोइ गए नृप नन्दन, निरखि जननि सुख झालने।

(२७)

रानि कौशिला सुवन सोवावति।

थप थपाइ प्रिय पाणि हरुअ मृदु, लाल वत्स कहि भावति।

श्याम सुखद लखि लोरी गा गा, पलना मधुर झुलावति।
मोरे लालहिं आव री निंदिया, शान्ति सुखहिं सरसावति।
दूधोदन तोहिं भोजन दै हौं, मान कही आ धावति।
आव आव अब आँखिन राखी, लाल ललित अस गावति।
आलस भरि शिव-सरबस सोये, राम लला छबि छावति।
हर्षण जननि रँगी वात्सल्यहिं, निरखि नयन सुख पावति।

(२८)

मल्हावती मातु मोदित पेखु।
शिशु श्याम शोभित अंक अलि, भलि भाग पूरण रेखु।
निरखि नयन चूमति लै करतल, उर बीच लावति लेखु।
कहुँ मुसकति मुसकावति कछु कहि, धनि लालति हृदयेशु।
अंचल ढाकि पियावति मन मुद, सुठि सीह सुरतिय देखु।
जबहिं रुदत हरि मातु चुपावति, कछु वाद्य बोलत बेखु।
नयन नींद लखि शान्ति सुपलना, सुतवाय भावति देखु।
हर्षण जेहिं सुख सनी कौशिला, नहि गम्य भाषण शेषु।

(२९)

आजु लाड़िले लछिमन लोने।
पलना पौढ़े रुदत शान्ति नहिं, मातहु अंक सुखौने।
बहु उपचारि दीठि झरवाई, दीन्ही भाल डिठौने।
भयो लाभ नहिं नेकहुँ सुनतहिं, आये गुरु नृप भौने।

कहेव शिशुहि को प्रिय प्रभु पलना, पौढ़ावहु नहिं रोने।
सुनत सुमित्रा लै सौमित्रहिं, राखी हरि ढिंग सोने।
हँसे हुलसि सह राम मगन मन, आनँद लहेव अहोने।
खिसकत लखन राम पद ओरी, परे हर्ष छबि छौने।

(३०)

लोने लोने लखन सलोने श्याम ललना।
प्रेम पगे लखि लखि एक एकन, किलकत कलित मगन मन पलना।
प्रीति पुनीति पुरातन परतम, शेषी शेष सहज मग चलना।
बने परस्पर बहिर्प्राण दोउ, तनिक वियोग दुसह दुख दलना।
को जानै को कहै नेह नव, अनुपम अकथ अगम्य अहलना।
लखि रनिवास सहित नृप दशरथ, आनँद अमित अघाय उछलना।
सुर मुनि सब भलि भाग सराहत, नहिं अस त्रिभुवन धन्य धवलना।
हर्षण हू की बिगरी बनिहै, लहि शुचि स्वामि सुखद सुठि ललना।

(३१)

पलना पौढ़ि मदन मन मोहन राजित रसमय राम लला।
मधुर मुखहिं दै पद अंगुष्ठहि, पी पी विहँसत करत कला।
निज पद महिमा मनहु विचारी, सुरसरि जनक सुभाँति भला।
सुधा स्वाद स्वादन सुठि सिखवत, वदत सबहिं पद प्रेम पला।
चिक्कन कच कुंचित कल कारे, भ्रमर भ्रमत मुख कंज थला।
नील नलिन नव नयनन निरखत, पलना चित्रन चकित चला।

कबहुँ कौशिलहिं लखि जिय चाहत, पय पीवन कर पदहिं हला।
हर्षण अम्ब अनन्दि पियावति, पेखि सुखद शिशु राम लला।

(३२)

चितवत चकित पालने राम।
कनक भीति मणिमय दिवि महलहिं, चित्रित चित्रन सुठि सुख धाम।
निरखत निज प्रतिबिम्ब जहाँ तहँ, किलकत गुनि शिशु दूसर श्याम।
कबहुँ पालने लगे खिलौनन, पेखि प्रमुद विहँसत अभिराम।
पवन प्रसंग केलि शुक सारिक, शब्द सुनत दै कान अकाम।
कबहुँ मातु कर कंकन किंकिंणि, धुनि सुनि चितव चतुर्दिक ठाम।
बिनु पहिचान कबहुँ लखि नारिन, इक टक हेरत दिव गुण ग्राम।
हर्षण हर्षित हिय कौशिल्या, ललकि लखति ललना अठयाम।

(३३)

अलि मसि बिन्दु भाल भल दियरा।
निर्मल शरद शशाङ्क सोह जनु, केश-कुञ्ज बिच बैठ अभियरा।
मुनि मन अगम शम्भु के सरवस, छबि छहराय लुभावत जियरा।
विहँसि वदन विधु करहि विनिन्दत, मन मोहन मधुमय मोहिं लियरा।
श्याम सरोज नील मणि नव नव, नील नीर-धर नयनन नियरा।
नृप नन्दन जग वन्दन पलना, वितरत पौढ़ि अनंदहि पियरा।
सुख सुषमा सौन्दर्य सिन्धु सत, वपु धरि सोवत शोभित धियरा।
हर्षण निरखि बलैया लेवत, युग युग जिऔ हरत हँसि हियरा।

(३४)

ललित लाल की लखो लुनाई।
कोटि मदन बारौं सखि तिन पर, पद नख की अरुणाई।
अधर अरुण अमृत रस पूरे, कर-पद तलहिं ललाई।
श्याम सरोज सुखद वपु सुन्दर, कल केशन करिआई।
चितवनि चारु हँसनि हिय हारनि, लखत कपोल बिकाई।
पीत झीन झिगुली तन झलकनि, छाजति छबि छहराई।
बाल विभूषण अंग भल भ्राजत, सुख सुषमा अधिकाई।
हर्षण अवध सुकृत फल अनुपम, पलना पर्‌यो सुहाई।

(३५)

सुखमय सुवन अवधेश आलय, शोभते सुखद पौढ़ि पलना।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, चारहुँ चारु ललित ललना।
मातु मुदित तन धोइ पोंछि प्रिय, सजि सिंगार मसि बिन्दु भलना।
पय पियाइ पुचकारति प्रमुदित, जननि भाग सम भाग तल ना।
अजिर सुवाय सूर्य मृदु धूपहिं, देति हरषि हिय हुलसि हलना।
लघु लखि वाद्य केलि सामग्री, विहँसत मुख शिशु नयन चलना।
गुप्त रूप सुर वरषि प्रसूनन, राम लला लखि उरहिं कलना।
हर्षण हर्षि अशीषहिं हर्षित, जिऔ वर्ष शत कोटि ललना।

(३६)

शोणित सुखमागार अधर वर।
करतल पदतल तैसहिं शोभित, अरुण वरण वारिज सम सुखकर।
जन जिय मानस प्रगट निरंतर, पियत पराग जहाँ मन मधुकर।
श्याम सरोज सुभग सर्वाङ्गहिं, वारत मनसिज कोटि अलक पर।
रामलला पलना पै विहँसत, उचकि-उचकि उछरत शुचि सुख भर।
आनँद कन्द वितरि बड़ आनँद, लखत मातु मुख मुदित चपल चर।
जननी निरखि भाग भलि आपनि, हर्षति हिय वात्सल्य रसहिं झर।
शची शारदा रती रमोमा, सींहहिं हर्षण भाग विभव तर।

(३७)

चाह चये रघुकुल गुरु ज्ञानी।
राम ललहिं दृग देखि नित्य नित, लहौं लाभ जिय जानी।
अन्त: पुरहिं जाव असमंजस, बिनु कारण मन मानी।
विधि विधान अनरसे राम शिशु, नहिं पय पियत न पानी।
ठाढ़े बैठे रहत न अंकहिं, रुदत अधिक अकुलानी।
डीठ झराय अम्ब उपचारी, दियो दान द्विज आनी।
लाभ न नेक लखत मुनि आन्यो, पूजेउ विनय विधानी।
पढ़्यो मंत्र नरसिंहहि सदगुरु, लखि लखि लाल लोभानी।
हँसे लाल लिय गोद वशिष्ठहु, हर्ष हृदय हुलसानी।

बार-बार पायन परि मैया, कहेव वचन मृदु बानी।
नित्य आइ इत दरशन देवैं, रघुकुल के गति दानी।
हर्षण सुनत फूल हिय मुनिवर, आवन कह्यो अमानी।

(३८)

सोवति सुभग सेजरिया, सुखहिं भरी।
सुखद श्याम शिशु हियहिं लगाये, पयद पियाव पियरिया।
आनँद अमित अघाय कौशिला, निरखति मुख हिय हरिया।
प्रिय स्पर्श जनित मधु पी पी, प्रेम पगति सुख सरिया।
कहुँ मुख कहुँ कर कहुँ पद चूमति, वात्सल रस मतवरिया।
भक्ति भूरुहहिं सींचि नेह जल, करि पुष्पित फल फरिया।
सोइ फल-रसहि रसीली रासति, धनि धनि प्रभु महतरिया।
हर्षण मातु प्रसादी पावै, सोइ रस नित झर झरिया।

(३९)

नवेली मन मोहिलो रे।
मंगल मंगल मंगल, मंगल दश दिश सोह।
भू नभ विवर बधावा बाजत, सुर नर मुनि मन मोह।
राम लला षट मास गए हैं, है अन्न प्रासन आज।
नृप मन्दिर मन मोदित माता, उत्सव कर सुख साज।

पंच भूत ग्रह वार नखत तिथि, सकल सुमंगल मूल।
जड़ चेतन हिय हर्ष सुशोभित, सुर तरु वर्षत फूल।
सुर रवनी गावहिं गगनोपरि, नृत्यहि नवल विमान।
हनत निशान जयति जय उचरत, सब सुर सुभग सुजान।
मंगल द्रव्य लिये नव नागरि, कनक कलश शिर राखि।
जाहिं नृपति गृह सोहिल गावति, सुयश शिशुन भल भाषि।
विप्र जिवाय दान दिय दशरथ, धेनु वसन मणि माल।
हय गय स्यंदन भूमि अन्न रस, गृह-कन्या सुख शाल।
घर घर गली गली अति आनँद, उत्सव उमड़ि सुहाव।
मुदित नारि नर नृत्यहिं गावहिं, शुचि सुख सिन्धु समाव।
दधि चंदन रँग कुंकुम केशर, छिरकि इत्र पुर लोग।
मिलहिं परस्पर जग रस भूले, प्रेम प्रभाव सुयोग।
पंच धुनी शुभ विविध केलि कल, माचि रही दिन राति।
मागध सूत बन्दि गुण गायक, भाँड़ विदूषक जाति।
मन भावत पाये सब सुख सनि, याचक ह्वै गे राव।
देहि अशीष चारु चिरजीवहु, चारहु सुत सुख छाव।
जागत बीति गई सब रजनी, एक निमिष सम लागि।
हर्षण सुख के सिन्धु समायी, अवधपुरी प्रिय पागि।

(४०)

राजित राम मातु की कनियाँ।
बाल विभूषण वसन विभूषित, छबि छहरति छन छनिया।

पद नूपुर कर कंकण पहुँची, कटि करधनि झन झनिया।
कुंचित केश कलित गभुआरे, शिर शोभित मणि मणिया।
पीत झीन झिंगुली भल भावति, श्याम वदन धनि धनिया।
भहरत भाल डिठौना छविधर, मधुमय मुख मुसकनिया।
नयन कमल कल कज्जल रेखा, सुख वितरत जन जनिया।
हिय बिच हरि नख हार प्रविलसत, हर्षण प्रभु गुण गनिया।

(४१)

जगत ज्योतिषी आज बने हैं हो शिवा के पिया।
वृद्ध वयस परसिद्ध त्रिकालग, जिन सम सर नहिं और जिया।
काग भुसुण्डिहिं करि संग शिशु शिष, विहरत बीथि अवध अभिया।
हृदय रमण रघुनन्दन निरखन, तरसत नयन सो वेष लिया।
शिवता सुभग सहज रखि ताखे, लोचन लाभ ललच लोभिया।
राम कृपा ते सुनत कौशिला, भवन बुलाय सुसेव धिया।
अंक लिये शिशु रामहिं रसि शिव, हस्त रेख फल उचरि दिया।
सुनि हिय हर्ष अम्ब अम्बक बह, दै अशीष शिव गवन किया।

(४२)

आज अपूरव योगी आयो री।
तन विभूति कटि केहरि छाला, भाल त्रिपुण्ड सुहायो री।
जटा जूट सिर गर अहि माला, श्रृँगी नाद सुनायो री।

मागत भीख द्वार पै ठाढ़ो, अलखहि अलख जगायो री।
सखि मुख सुनि कोशिल्या पठई, मणिगण वसन भरायो री।
लियो फेरि मुख पेखत योगी, अविचल अतिहिं अमायो री।
कह्यो दिखाव रानि-शिशु मोकूँ, इहै आस चित चायो री।
नहि चाहौं तेरो धन धामहिं, हर्षण पुनि पुनि गायो री।

(४३)

कहति कौशिला सुनहु सखी री।
मैं अपने हिय हार लाल को, कत लै लाउँ झखी री।
योगी वेष विलोकि डरैगो, असमंजसहिं लखी री।
कह सखि अतिथ विमुख बड़ हानी, जननी जियहिं रखी री।
भवन बुलाय पूजि भल योगिहिं, सुतहिं दिखाव अखी री।
लखत शिशुहिं शिव ताण्डव नृत्यत, प्रेमहिं प्रेम चखी री।
आपा भूलि परेउ भुइ मूर्छित, बहुरि जगे अलखी री।
हर्षण रक्षा-मंगल पढ़ि पुनि, गे जय जयति भषी री।

(४४)

आज एकादशि अवधहिं आई।
प्रमुदित नगर नारि नर नेहन, भोरहिं नदिहिं नहाई।
घर घर तुलसी प्रभु की पूजा, हरि चर्चा चित चाई।
भाव भरे कीर्तन रस रासत, उछरत लोग लोगाई।

पंच धुनी मन मोहति चहुँ दिशि, आनँद अति अधिकाई।
तेहि दिन सब सुर चढ़े विमानन, आये अवध अघाई।
स्वर्ग द्वारि सरजू सब न्हाये, ब्रह्मादिक चित चाई।
जानि वशिष्ट भेंट भरि भावहि, हर्षण सुख न समाई।

(४५)

चाह भरी सब सुर समुदाई।
संग वशिष्ठ सोह सुख सानी, नृप मन्दिर महँ आई।
भूप प्रणमि पूजे विधि वेदहि, कहि निज भाग भलाई।
सुर रुचि राखि रानि रुख रामहिं, रक्षा हित तहँ लाई।
ब्रह्म बाल उमगेउ उर आनँद, देव दरश दिव पाई।
भूले मान षड़ानन गणपति, विधि हर सह सुरसाँई।
शक्ति सहित वरणे बहु मुखते, दशरथ बिरद बड़ाई।
लहे लाभ लोचन ललचाने, हर्षण हिय हर्षाई।

(४६)

शिशु सिर सुण्ड फिराव गणप री।
रक्षा मंत्र पढ़त मन मोदित, पै प्रभु रुदत डेराव।
तैसहिं पठत षडानन लखि लखि, भय भयदहु भय खाव।
विधिहिं विलोकि चार मुख रोवत, यद्यपि चहत खेलाव।
विकट वेष रुद्रहिं लखि अभई, अतिहिं रुदत रघुराव।

विहँसि लियो गिरिजा निज अंकहिं, मधुर वचन समुझाव।
देखि दशानन दपटि विदरिहौ, सुरन हेरि भय पाव।
राम लला सुनि भेदहिं विहँसे, हर्षण हर हर्षाव।

(४७)

मधुर भाव भावित नृप रनियाँ।
जान्यो सुरन देखि भय पायो, प्राण-प्राण जिय जनिया।
द्विजन बुलाय दान बहु दीन्ही, रक्षा मंत्र पठनिया।
धेनु पूँछ फिरवाय शीश पै, भय भगाव लै कनिया।
डीठ निरोधक भाल डिठौना, दिय लगाय भल भनिया।
कहत सखिन सो अब जनि द्वारे, भेजहु लाल लुभनिया।
गुरु की कृपा इतै सुख सनिहैं, भीतर भले भवनिया।
हर्षण यहि विधि प्रेम पगी सो, कहत देव धन धनिया।

(४८)

घुटुरुन चलत आनँद कन्द।
कटि किंकिणि पग पैजनि बाजै, लाजत साम सुछन्द।
जानु-पाणि द्रुत दौरत किलकत, मोहत मन मुख चन्द।
बाल विभूषण वसन बिराजित, चितवनि चपल अनन्द।
मुख सरोज अलकै अलि बिथुरीं, पियन मधुर मकरन्द।
मुरुकि मुरुकि जननी मुख पेखत, भागत बहुरि अमन्द।
बैठि विलोकि कौशिला पृष्टहिं, पकरि खड़े नृपनन्द।
गोद बिठाय मातु मुख चूमति, हर्षण बिन दुख द्वन्द।

(४९)

अलि आजु कौतुक एक लखि आई।
दशरथ नृपति आँगने घुटुरुन, विहरत ब्रह्म बाल बनि भाई।
वेद वेद्य वेदान्त सार जो, सुख प्रद सगुण स्वरूप सुहाई।
भूपति भामिनि अङ्क खेलावति, चूमति वदन भक्ति फल पाई।
सुर नर मुनि सह वधुन सराहैं, नरपति तिय की भाग भलाई।
विविध वेष धर त्रिभुवन वासी, आवहिं दर्श हेतु अँगनाई।
निरखि मुदित मन मोहन किलकत, अधिक अधिक लोचन ललचाई।
हर्षण परम प्रेम ते रीझे, पर-प्रभु बाल विनोद दिखाई।

(५०)

दशरथ अजिर विहर वर बाल।
जानु-पाणि बल बेग चलत कहुँ, ठिठकत कहुँ सुख शाल।
निज प्रतिबिम्ब देखि मणि आँगन, चितव चकित चष चाल।
पाणि पकरि गहिबे कर यतनहिं, कहुँ मुख धरत निहाल।
कहुँ भागत किलकत कल कलरव, अरुझि टूट मणि माल।
मातु मुदित लै अंक बतावति, लखहु अहै कोउ लाल।
हँसत सुखद दै सुभग थपोरी, परम प्रेम पथ पाल।
हर्षण लखत देव घन-ओटहिं, वर्षत सुमन सुकाल।

(५१)

घुटुरुन चलत चारौ चारु सजनी।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, श्याम गौर सुकुमारु।

नील-पीत मणि मूरति मानहु, मदन रच्यो मन मारु।
शारद शशि शत कोटि जाहि पै, बार-बार बलिहारु।
बिहँसत बदन बैठि पुनि कबहुँक, पौढ़ि अजिर किलकारु।
गगन सकुन प्रतिबिम्ब निरखि कहुँ, भय भरि भगत दुलारु।
कौशिल्या केकई सुमित्रा, लखि लूटहिं सुख सारु।
हर्षण प्रेमानन्द मगन मन, पल सम बीतत वारु।

(५२)

विहरत बाल अंक लै भूपति, भव्य भवन की उच्च अटा।
चूमि-चूमि मुख प्यारत बहु विधि, सोह सुमेरहिं श्याम घटा।
रत्नालका नाम तिय देखति, भई विभोर निहारि छटा।
गिरी भूमि निज सदन अटहिं ते, जनु विहंग दोउ पंख कटा।
लै कछु चेत बहुरि बनि विरही, तजि अहार मुख राम रटा।
प्रभु प्रेरित सुनि श्रवण कौशिला, सुत लै देखन गई तटा।
परी पलँग लखि श्याम सुखी भै, रस वाछल हिय माहिं ठटा।
हर्षण हृदय लाय मुख चूमी, नयन नीर नहवाय सटा।

(५३)

लाल मोरे प्रिय प्राण पगन कब चलिहौ।
रघुकुल कमल दिवाकर चारहु, ठुमकि ठुमुकि भुइ भलिहौ।
छगन मगन बाहर कहुँ भीतर, कलित केलि सुख ढलिहौ।
मधुर वचन तोतराय अम्ब कहि, दौरि हाथ गर डलिहौ।

अस्त्र शस्त्र लघु लै-लैके कब, राज खेल कहँ खेलिहौ।
भूप गोद कहुँ बैठि सिंहासन, सबहिं दरश दै पलिहौ।
अंचल पकरि कलेव हितै कहुँ, मोहि ते अरुझि सुफलिहौ।
हर्षण मातु हृदय हर्षावति, लखति तोरि तृण बलिहौ।

(५४)

दुइ-दुइ दसन हँसनि मधु घोर।
वाणि मधुर तोतरानि सुखद सुठि, सुनत बिक्यो मन मोर।
चारों लाल चारु दशरथ के, लाजत काम करोर।
प्रेमा-भक्ति पूर्णिमा प्रमुदित, निष्कलंक रस बोर।
अजिर अकाश उदित शशि शारद, विहरत वितरि अँजोर।
अमृत झर झर चुअत स्वादु कर, दम्पति पियत अथोर।
अली अवध-वासिउ भरि भाग्यहिं, करि प्रिय दर्श विभोर।
हर्षण चन्द्रकीर्ति नृप नन्दन, बाल ब्रह्म चित चोर।

(५५)

लिये कौशिला अंक राम कहँ चन्द्र दिखावति।
आव-आव कहि चन्दा मामा, मेरो लाल बुलाव सो गावति।
मचल परे नृप नन्द मृगाङ्कहि, लैहौ खेलन हित तोतरावत।
बूझत नाहिं बुझाए हिय गुनि, जल भरि थालिहिं शशिहिं लखावति।
लखि प्रतिबिम्ब श्याम मन सत्यहिं, पाणि पकरि कल-कल किलकावत।
तबहि तोय तहँ भो आन्दोलित, हेरत हरि शशि बिम्ब न पावत।

कहेउ मातु तव भय भगि गगनहिं, उडगनपति नभ बीच विराजत।
अब नहिं अरुझि किहेउ हिय हर्षण, लखत रहहु मन मोद बढ़ावत।

(५६)

कौशिल्या लालहि नहवाई।
करि श्रृँगार पवाय मुदित मन, लाडि प्यारि पलना पौढ़ाई।
करि स्नान भोग बहु विरची, निजकुल इष्ट देव हित माई।
पूजि बहुरि नैवेद्य चढ़ाई, गई जहाँ सोवत रघुराई।
पुन: आइ हरि मन्दिर देखी, भोजन करत सुवन सुखदाई।
मानि हृदय भ्रम पुनि गै तँहवा, पलना परे राम लखि आई।
बार-बार इत उत गै जननी, देखि दृश्य अतिशय अकुलाई।
मातहिं विकल देखि नृपनन्दन, दीन्ह विराट स्वरूप दिखाई।
अगनित रवि शशि अरु विधि हरि हर, रोम-रोम बहु अंड लखाई।
अम्ब सभय निज नयन को झाँपी, ब्रह्म गिनी सुत कहि पछिताई।
मातहिं कहेउ बुझाय न व्यापी, मम माया जो सबहि नचाई।
कतहुँ कहेउ जनि हर्षण सुनि के, मातु हर्षि हिय माहिं लगाई।

(५७)

निशि दिन जात न जान जननि सुख सरित बही री।
भाग विभूति कहे को ताकी, शेष गणेश गिरा मति थाकी,
सुख सागर रसखान, श्याम सुत सुभग सही री।

ब्रह्मा विष्णु महेश लुभाए, विविध वेष धरि अवधहिं आए,
शक्ति सहित पुलकान, लाहु लोचननि लही री।
सुर नर मुनि गुणि गंधर्वा, भूपति भवन पहुँचि ते सर्वा,
गावहिं गुण भगवान, तियन सह नेह नही री।
नयन वंत अस को जग जायो, बाल विलोकि न ललकि लोभायो,
हर्षण हिय में आन, जगत दुःख दाह दही री।

(५८)

काग भुशुण्डि की भाग भली।
करत कलेव राम रघुनन्दन, पेखत प्रेम विभोर बली।
जूँठन अजिर परेउ लै चोचहिं, खात मुदित मन आस फली।
लखि लखि ताहि हँसत मधु मधुरे, भक्त वछल कृप कोर ढली।
पूप दिखाय समीप बुलावत, कौतुक प्रिय नृप कुअँर चली।
चहत गहन उड़ि जात चतुर सो, फेंकत पुआ किशोर कली।
सहज स्वामि सेवक सुख वितरत, लखत काग आनन्द थली।
हर्षण कबहुँ काग-प्रभु दर्शन, नित्यहिं पाय प्रसाद पली।

(५९)

मधुर मधुर मन मोहन राम।
कोटि मार मदगार नील मणि, नील नीर धर श्याम।
कुंचित केश कलित कल कारे, चिक्कन अति अभिराम।
लहन कपोल कमल अलि अवली, छुटत रसी रस धाम।

केशर खौर तिलक गोरोचन, भृकुटी भल धनु काम।
नयन नवल बड़रे चित चोरत, कंज–मीन–मृग–वाम।
श्रवण सुभग मृदु हास अधर भल, घ्राण दंत दुध जाम।
चिबुक ग्रीव उर उदर कंध कर, कटि पद्र हर्ष ललाम।

(६०)

शारद विधु कर निकर हँसी।
नृप सुत की लखि आज अली सुनु, रूप जाल के फाँस फँसी।
काह करौं नयना नहिं माने, बिना लखे जल–मीन जसी।
काज करौं गृह या तहँ जाऊँ, जालिम जुलुफ निहार बसी।
काम करोर अँग–अँग वारहुँ, शोभा सिंधुहिं धाय धँसी।
गहरे तल तहँ बैठि न अबरी, उबरब बात चलाव असी।
धनि–धनि नृपति रानि कौशिल्या, सुतहिं लगाए हृदय रसी।
तिन प्रसाद हर्षण बड़ भागी, अवध नारि नर नेह लसी।

(६१)

ठुमुक–ठुमुक चलत राम मोहति नृप रनियाँ।
केशर को खौर किये, मसी बिन्दु भाल दिये,
सिरहिं सुभग पेंच परी अलकै मणि मनियाँ।
कानन कुण्डल सुसोह, कल कपोल मनहिं मोह,
अधर अरुण अमिय सार, मुसकनि सुख सनियाँ।

दोउ दृग वारिज विशाल, कारे चंचल सुचाल,
जाहि चितव सुधा सिन्धु बोरत चित हनियाँ।
केकि कंठ हृदय हार, शोभित हरि-नख अपार,
कंकण कर मुदरि मनहिं, मोहति धनि धनियाँ।
केहरि कटि कहौं काह, किंकिनि कल लसत आह,
धोति पीत बाल रविहिं, लाजति चमकनियाँ।
चरण अरुण श्याम श्वेत, संगम शुचि प्रयाग खेत,
अंकुश ध्वज कुलिस कमल, बाजत पैजनियाँ।
झिगुली झलमल सुझीन, झलक बाल तन सुभीन,
ललित विभूषणहु लघु लघु, हर्षण छबि छनिया।

(६२)

छोटो सिर छोटी पेंच छोटी प्रिय पगिया।
छोटो भाल छोटो खौर छोट तिलक रेख गौर,
छोटि अलक मुखहि परै, वितरत अनुरगिया।
छोट-छोट कान सोह, छोटहीं कुंडल प्रमोह,
छोटो ही हिय को हार, राजित मणि-धगिया।
छोटे कर करज शोभ, छोटे कंकन प्रलोभ,
बाजू बन्द छोट मुदरि, छोटी नग लगिया।
छोटि कमर लसत नीक, छोटि मेखलाहु ठीक,
छोट पगन छोटि बजति, पैजनि बड़ भगिया।

छोटि झिगुलि छोटि धोति, छोटी पनहीं सजोति,
छोट धनुष छोट बाण, खेलत रस रगिया।
क्रीड़न की साज छोट, मधुर-मधुर हँसनि ओंठ,
चितवनि चित चोर लेत, ठुमुक-ठुमुक बगिया।
छोट-छोट बाल सखा, छोट बन्धु ललित लखा,
हर्ष संग संग लिये, विहर औध ठगिया।

(६३)

छोटे-छोटे छोहरा छहरि छबीले सोहैं चारु चार री।
क्रीड़त छगन मगन द्वार देश, हर्षहि नर नारी निहार री।
छोटे-छोटे बाल संग सँग, शोभित सुख सुषमा सिंगार री।
तोप तुपक बिना बार छोटी, शर-धनु-असि-चर्महि सुधार री।
कहुँ भमरा-पतंग अन्य खेले, खेलत मन मोदित अपार री।
खुनिस परस्पर नहि करत कोउ, सबहिं राम आनँद अधार री।
लखि-लखि नभ ते सुर प्रसून झर, नयन सुफल जानहिं विचार री।
हर्षण अवध आय बस अनँद, भाग भनत शेष न सँभार री।

(६४)

सुनि-सुनि सुगति श्याम प्रेम पै पगे री।
दोउ दृग नवल नेह नीर चुअत, भाव भरे रंग में रंगे री।
सुर पुर ते नित गंधर्व आइ, कला निपुण नेह में जगे री।
वाद्यहिं बजाय गानहिं सुनाय, सरस सुखद राम के लगे री।

बाल कोऽपि तद्यपि सुनन चाव, रघुनन्दन बोध में अगे री।
गावत जबहिं शिशु के स्वभाव, अमिय धार बहत सी मगे री।
आनँद उमगि-उमगि बोरि देत, नारि नरन नयन के ठगे री।
हर्षण अवध बाल वितरि सुखहिं, दरश देत सबहिं के सगे री।

(६५)

राजत राम भूप की कनिया।
नील मणी-घन श्याम सरोरुह, वदन सरस सुठि सुख की खनिया।
सुठि सुन्दर माधुर्य महोदधि, कोमल लावण ललित लुभनिया।
नयन विशाल पीत पहिरे, घन बिच विद्युत वर्ण सुहनिया।
कोटि भानु सम परम प्रकाशित, छोटी कुण्डल क्रीट छोहनिया।
चन्दन चर्चित स्त्रग सुगन्धमय, अँग-अँग भूषण भव्य शोभनिया।
सुर नर मुनि गंधर्व सुकिन्नर, सेवित बाल विनोद मोहनिया।
हर्षण आनँद आनँद वर्षत, भीगत सरसत सकल भुवनिया।

(६६)

क्रीड़त आज संग लिय बालन, कलित केलि रस राम रसे री।
खाब पियब सुधि भूलि बन्धु सह, लेत लेवावत दाँव लसे री।
भोजन करत बोल दस स्यन्दन, नहिं समाज तजि आव फँसे री।
चली कौशिला पकड़न बरबस, ठुमुक-ठुमुक भगि जात हँसे री।
जानि श्रमित अम्बहि सुखदायक, धूलि धूसरित धाय वशे री।
भूप गोद हरि बैठि चपल चित, भोजन करत अनन्द धँसे री।

अवसर पाइ देत किलकारी, जूँठ लगाय भगे झटसे री।
हर्षण पोछि मुखहि दध्योदन, पाय हँसे शिशु नयन दसे री।

(६७)

हौं रघुकुल मणि पै वारियाँ।
कजरे नयन चारु चितवनि पै, भव सुख सिन्धु बिसारियाँ।
शोभा सदन श्याम शिशु लखि-लखि, कोटि काम छबि छारियाँ।
अधर मधुर मधु मुसकनि मीठी, अमिय स्वाद सुठि खारियाँ।
शत शत चन्द्र लजावन आनन, सरस सुखद प्रिय कारिया।
कुंडल क्रीट पेंच पीताम्बर, भानु तेज सत धारिया।
चरण कमल की रेख रेख पै, त्रिभुवन छबि सिंगारिया।
वारि-वारि हर्षण सुख सरसहिं, अवधपुरी नर नारियाँ।

(६८)

ललित लाल साकेत धनी।
खेलत दौरि मातु कटि लपटत, अंचल पकड़ि तनी।
माँ-माँ कहत मोहि दे भोजन, लागी भूख घनी।
भरत लषण रिपुदमन सखा सब, खइहैं सुखहिं सनी।
अकनि अम्ब चुम्बति लै अंकहि, प्यारति देहुँ भनी।
झारि पोंछि पुचकारि भ्रात युत, सुत रघुवंश मनी।
स्वाद सुधा शुचि भोग पवाई, कर लै कवल कनी।
दास राम हर्षण पुर बालहु, पाये भाग बनी।

(६९)

खेलत अजिर जननि सुखदाई।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, संग सखा समुदाई।
शिव की मूर्ति बनाय सलोनी, पूजत हिय हर्षाई।
अक्षत पुष्प पत्र धूपादिक, भरि-भरि भाव चढ़ाई।
हर्षण स्तुति करहि सबहिं मिलि, हर-हर महादेव गाई।

(७०)

अलि रस रूप राम निहार।
सुभग शिशुअन बीच भ्राजत, चन्द नखत मझार।
पुष्प कन्दुक पाणि उछरत, काम कोटिन वार।
जड़ित चौतनि शीश शोभित, केश कुंचित कार।
श्रवण कुंडल कल कपोलहिं, करति हिलि मिलि प्यार।
अधर अमृत पियति लहरति, सोह नक-मणि सार।
हार मणि मय हृदय हलरत, किंकिनी कटि धार।
चरण नूपुर कर सु कंकण, मुद्रिका मन हार।
श्याम सुषमा छबि सिंगारक, सिन्धु शोभित सार।
पीत पट फहरत सुक्रीडत, चित्त चोरत चारु।
हास शशिकर दंत दाड़िम, नयन अति अनियार।
हर्ष हिय हर मनहिं मोहन, मुखहिं शशि शत वार।

(७१)

मैया मोहिं ऊँघ लगी।
झुकि-झुकि परत बैठ तव अंकहि, अब नहिं जात जगी।
कहत अम्ब कछु पाय के लालन, सोवहुँ सुखहिं पगी।
ना-ना कहत मचल नृप नन्दन, भुइ महँ परे भगी।
कहिहौं बात कहत दाऊ ते, नाहिं सोवाव ठगी।
सुनत कौशिला प्रेम विवश ह्वै, गोद उठाय रँगी।
झारि पोंछि पुचकारि जाइ द्रुत, सुतहिं सुताव सगी।
स्वयं पौढ़ि हिय लै हरि हर्षण, भाग विभूति जगी।

(७२)

मातु पुत्र लै पलँग परी।
उर छपकाय सोवावति सुख भरि, लाल न नींद वरी।
कहत कौशिला कलित कहानी, गज की विपति खरी।
सुनत राम कह धनु शर मेरो, देवै द्रुतहिं अरी।
उतरि पलँग भागन से लागे, उर आवेश भरी।
पकरि अम्ब कह ग्राह गतिहिं गुनि, मार्‌यो चक्र हरी।
गज उधार सुनि शान्त भए प्रभु, मातु विमोह डरी।
रक्षा मंत्र पाठ करि हर्षण, शिशुहिं सोवाव परी।

(७३)

जननी कहति सोउ-सोउ लाल।
जबही दिवस नींद अधिक लेत, तबहिं नयन झाँपत न बाल।

अखियन बीच ऊँघ तनिक नाहिं, चपल उठत बैठत अकाल।
उर महँ प्रभु पराय प्रमुदि बहुरि, डरवावति बोलति बवाल।
सोउ नतरु हउआ पकरि तोहिं, जावै लै लालन कुचाल।
लागे उरहि राम आय वेग, किये शयन मुद्रा सुभाल।
भय के भयद भयहिं आनि हिये, प्रीति विवश दाहिन दयाल।
हर्षण हृदय हेरि जननि भाग, भजहु शम्भु मानस मराल।

(७४)

जागु लाल भयो भोर सोवै जनि भोरो।
नखत कान्ति मलिन भई, चकई पति मिलन गई,
जानि भानु उदय व्यौम, तिमिर गयो घोरो।
परम ब्रह्म जगत ध्याव, सूर्य अर्ध संधि पाव,
सुखद त्रिविध बहत वायु, शकुन करत शोरो।
नौबति नव बजत द्वार, बन्दी विरदहिं पुकार,
विप्र वेद धुनि सुहाय, मंगल पढ़ि तोरो।
बाल वृन्द दरश हेत, आये तव नव निकेत,
नृपति नयन ललच रहे, अंक लहन छोरो।
उठहि-उठहि लाल मोर, सब सुख पावै अथोर,
सखा संगि सुहृद हेरि, हर्ष बनिं विभोरो।
जननि कहति बार बार, जागे सुनि नृप कुमार,
दृगहिं मलत मुख जम्हाय, आलस तन बोरो।

जहँ तहँ आननहिं लाग, लोचन कज्जल सुभाग,
बिथुरि केश मुखहिं घेरि, हर्षण चित चोरो।

(७५)

जागे राम कुमार भोर भये।
उठ बैठे कंचन पलँगा पै, दशस्यंदन सुख सार।
आलस भरे उनींदे नैना, झँपत खुलत बहु बार।
सोयहु वदन सुहावन शशिशत, माँ माँ कहत पुकार।
सुनि कौशिल्या शयन कक्ष कहँ, हरबर ह्वै पगुधार।
गोद उठाय कंठ लै लालहिं, चूमति प्रेम पसार।
पाणि पैर मुख दृगन धोइ पुनि, भूषण वसन सम्हार।
केशर खौर तिलक दै हर्षण, दीन्ह कलेऊ प्यार।

(७६)

भोर भए नृप नन्दन जागे।
भरत लषण रिपु-दमन नेह बस, सखा सुहृद सुख पागे।
जागि-जागि निज सदनन ते सब, ठाढ़ भए प्रभु आगे।
विहँसि चितय मृदु बोल परस्पर, राम ललकि हिय लागे।
अनुज सखा लहि दरश नयन भरि, अधिक-अधिक अनुरागे।
लखति कौशिला प्रेम विशद वर, प्यारति सबहिं, सुभागे।
मुखहिं धोइ पहिराय वसन तन, भूषण भूषि अदागे।
भरि वात्सल्य कलेउ कराई, लखि हर्षण बड़ भागे।

(७७)

प्रात समय नौबति नृप द्वारे, नादति मधुर बैन।
रँगीली रसहिं भरी।
जागु-जागु कहि सबहि जगावति, ब्रह्म स्वरन सुख दैन।
रँगीली रसहिं भरी।
श्रवण सुनत जागे जग वन्दन, राम लला अलसैन।
रँगीली रसहिं भरी।
मातु मुदित मुख धोइ पोछि पुनि, दिय कलेउ रस ऐन।
रँगीली रसहिं भरी।
लखन लालसा नरपति आए, लीन्हे अंक सचैन।
रँगीली रसहिं भरी।
बाहर कक्ष बैठ करि चुम्बन, प्यारत सुत जित मैन।
रँगीली रसहिं भरी।
भरत लखन रिपुदमन पहुँचि पुनि, दर्शन हित तेहिं ऐन।
रँगीली रसहिं भरी।
चारहु सुवन साथ नृप सोहै, विधि सनकादिक लैन।
रँगीली रसहिं भरी।
वरणहिं विरद बन्दि गुण गायक, श्रवण सुखद चित चैन।
रँगीली रसहिं भरी।
हर्षण धन्य नृपति धनि रानी, परमानँद दिन रैन।
रँगीली रसहिं भरी।

(७८)

भोर भये नृप राम गोद लै, बाहर भवन विराजि रहे।
गावत गुणि गायक गुण गोविंद, राग भैरवी भ्राजि रहे।
नाचि अपसरा भाव बतावति, वाद्य विपुल विधि बाजि रहे।
सुर नर मुनि गंधर्व सुकिन्नर, सेवित प्रभु सुख साजि रहे।
विप्र बन्दि नट भाँट भाँड़ भल, याचक लहिधन छाजि रहे।
चारहु सुत चिर जियहु नृपति के, जय जय धुनि सब गाजि रहे।
दशरथ भाग सिहात सबहिं सुर, विधि हरि हर मन माँजि रहे।
हर्षण आनँद अवध बीथि बह, जेहि लखि योगी लाजि रहे।

(७९)

बीथिन विहरत राम सखा सँग लीने।
आनँद कन्द मदन मन मोहन, सोहन सुख के धाम।
रसि रसि अवधपुरी नर नारी, चितवत एक टक श्याम।
थकित होंहि नव नेह हृदय भरि, पावत मन विश्राम।
जेहिं चितवहिं नृप नवल नील मणि, होवत पूरण काम।
चित्ताकर्षक रूप राशि कहँ, चह लावन उर ठाम।
प्रेम पगे पशु पक्षिहु पीवत, नयन मार्ग रस राम।
जड़ चेतन हर्षण हरि रागे, लखि-लखि ललित ललाम।

(८०)

रवि कुल रवि रघुनन्दन छवि छौना।
बाल सखा लै जाय जननि गृह, वितरत आनँद अनुप अहोना।

बाल केलि चेष्टित रह यद्यपि, जातहिं करत प्रणाम सलोना।
भरि वात्सल्य अम्ब लै अंकहि, चुम्बति लालति ललकि ललोना।
मधु वच आशिष दै दुलरावति, मोदक मुखहि पवाव मिठोना।
चोटी बाँधि सम्हारि सुभग तन, भूषण वसन सजति सरसोना।
चंचल चषनि चपल चित चोरत, हरबरात लै खेल खिलौना।
हर्षण मातु अदर्श न चाहति, करति विलम्ब केहु मिस भौना।

(८१)

गुरु गृह आय पढ़ायो काह, पढ़ै मम लालन।
सुनत मातु मुख बैन हरषि हिय, पढ़ेउ सबहिं सुख माह।
श्रवण सुखद सुनि पाठ प्रेम पगि, अम्बक अम्बु प्रवाह।
रामहिं अंक लिये कौशिल्या, लालति ललित उछाह।
शिशुपन-सुख-संतोष-प्रीति-प्रभु, देहिं जननि जिय चाह।
सुत दृग ओट चोट जिय जानति, तनिक विरह उर दाह।
धनुर्बाण बिन लहे लाल मम, बहिर न जान उमाह।
समुझि मातु शर धनु नहि देवति, हर्षण हरि चह लाह।

(८२)

अरुझि-अरुझि खीझ राम रोवत भुइँ लोटी।
नयन नलिन बहत नीर, देहि धनुष कह अधीर,
अम्ब अबहिं केलि करन, जावहुँ करु कोटी।
मातु लाल लै उछंग, झारि पोंछि सुभग अंग,

चूमि-चूमि मुख सरोज, परसति प्रिय चोटी।
कहति केलि गृहहिं माहिं, करहु वत्स अति उछाहि,
अनुप खेल साजि-साजि, राखहुँ नहिं ओटी।
सुनत राम ना ना सुनाव, कहीं मातु मुदित भाव,
नाचु नवल धनुहिं देहु, हर्षण घिव रोटी।

(८३)

ठुमुक-ठुमुक नचत राम चंचल चित चोरे।
नूपुर रुन-झुन बजाय, मुसुकि मुसुकि मन मोहाय,
नयन सुधा सींचि सींचि, गावत भल भोरे।
चहत चाप लहन हाथ, क्रीड़न हित बाल साथ,
वेद वेद्य ब्रह्म नचत, प्रेम विवश हो रे।
देखि-देखि रामचन्द, मातु मनहिं अति अनन्द,
प्रेम पगी सुधहिं भूलि, नयन नीर बोरे।
अंक लीन ललकि लाल, चूषति रस भरि रसाल,
हर्षि हृदय हेरि-हेरि, हर्षण तृण तोरे।

(८४)

खेलन हित चंचल चलन चहत, जननी नेह भरी विरह बहत।
तनिक बिछुर लालन अनत जाँय, हृदय धड़क बाछल गुण स्वभाय।
भयदहिं भय दिखाय वदति बैन, सुनहु वत्स मोरे नयन नैन।
जावहु जनि बाहर केलि काज, हाय उहाँ हउआ बैठ आज।

पकरि तोहि जावै अनत भागि, तेहिं ते खेलु इहाँ प्रेम पागि।
बन्धु सखा सबहीं इतहि आनि, मनहिं मोद भरि हैं रुखहिं जानि।
भाँति-भाँति भोजन सुखद देहुँ, विविध वसन भूषण ललित लेहु।
प्राण-प्राण हर्षण हरषि हीय, समुझावति पुत्रहिं रसहिं लीय।

(८५)

क्रीडन विघात समुझि राम रोष भरे सोहैं।
भूषण वसनहिं उतार, फेंक दिये चीर फार,
कनक मणिन भाण्ड भले, फोरत मन मोहै।
भवन मध्य अल्प तरुन, बेलि पुष्प करहिं धरुन,
तोरि-तोरि जड़ उखारि, खीझि-खीझि कोहैं।
बाँधन हित अम्ब दौरि, भय दिखाय कहति खोरि,
वायु वेग भगे श्याम, चंचल भल भोहैं।
दूर खड़े निज अँगूठ, दिखरावत कह न झूँठ,
पकरु-पकरु भला भोरि, हर्षण जग जोहैं।

(८६)

कौशल किशोर रोष मोऊ।
वृद्ध समान अभय बनि बोलत, भुज फर फराय दोऊ।
हउआ ते जनि मोहिं डरपावै, मोर मातु जिय जोऊ।
अन्य नृपति सम नृप कुमार नहिं, सुनहु सुनावहुँ सोऊ।
नृप-मणि मुकुट पूज्य-पद पावन, कहहुँ सत्य नहिं गोऊ।

बड़े-बड़े निशिचर संहारेउ, सिंह व्याघ्र बहु खोऊ।
मरिहौ हउअहि अवशि एक शर, चलु दिखाव जहँ होऊ।
हर्षण हम रघुवीर बाँकुरे, सम्मुख होय न कोऊ।

(८७)

मैया अपनो गौरव राखै।
हौं तो दास तोर सब भाँतिहि, फेरु कृपा की आखैं।
धनु-शर-असि-तूणीर देहिं मोहि, मन महँ नेक न माखै।
जो नहिं देय विनय सुनि मोरी, अस्त्र शस्त्र धरि ताखै।
अवशि चुराय क्रीड़नक काजहि, जाउँ सखन संग झाखै।
तेहि ते कहौ बहोरि बहोरी, करसि मोर मुख भाखै।
सुनत सयान सरिस सुत शब्दन, मातु कहति दै साखै।
आउ अंक निज लाल न बँधिहौं, हर्ष रूप रस चाखै।

(८८)

सुनत मातु मुख वचन कुमार, सुठि सुख मानि जिया।
दौरि द्रुतहि चरणन लपटाने, बालक अपि बुधवार।
कौशल्या लै अंक प्यार पुनि, बोली वचन पियार।
प्राण-प्राण प्रिय ललन हमारे, नयन विषय सुखसार।
बिन देखे मोहि कल न परत है, मन महँ अतिहि खभार।
तेहि ते धनुहिं छिपाय डरायो, निज हित युक्ति विचार।
लेहु चाप शर खेल द्रुतहिं इत, आयो मम मन हार।
जेहि ते आनँद मातु तुम्हारी, हर्षण लहै अपार।

(८९)

प्रमुदित प्रभु अति आनँद पाई।
धनुशर पाइ प्रेम ते पग परि, तोषेउ जननि जुड़ाई।
खेलन चले संग लै भ्रातन, बाल सखा समुदाई।
सरयू पुलिन केलि के कुंजन, शोभा वरणि न जाई।
क्रीड़त देखि सिद्ध सुर किन्नर, ऋषि मुनि निकर सुहाई।
लोभित लोचन ललकि लखत सब, जय जय शब्दहिं गाई।
वर्षत सुमन मनहिं मन मोहत, चरण कमल लव लाई।
हर्षण हर्षित अवध नारि नर, करि निज भाग बड़ाई।

(९०)

श्याम शरीर सुभाय सुहावन।
बाल विभूषण लसत पीत पट, कोटि काम छबि छावन।
काक पक्ष सिर सुभग चौतनी, भव्य भानु द्युति दावन।
कुण्डल कर्ण खौर केशर की, भहर भाल भल भावन।
भौंह कमान कान लौं बड़रे, लोचन लसत लुभावन।
कल कपोल अधरन अरुणाई, हास हरति हिय पावन।
कटि कर कंध चरण चित चोरत, उत्तरीय फहरावन।
हर्षण भ्रात सखा संग क्रीड़त, त्रिभुवन मोद बढ़ावन।

(९१)

बाल युद्ध निरखत नृप बाला।
हार जीत हरि हाथ बुझावत, दै उत्साह कृपाला।

मुखोल्लास रघुवीर रहै गुनि, भ्रात सखा सुख शाला।
द्वन्द युद्ध सब करत परस्पर, नृपति नीति प्रति पाला।
सुख सागर लखि-लखि सुख पावत, सुहृदन करत निहाला।
अभय करत हिय लाय अर्पि तिन्ह, विविध वसन मणि माला।
सखहु सनेह विवश रघुवर के, तनिक वियोग विहाला।
हर्षण हुलसि हृदय हर्षावत, निरखत नयन विशाला।

(९२)

अलि मन मोहने पै मोहाय गई रे।
बीथिन विरहत बाल सुभग तन, केशन में अरुझाय गई रे।
क्रीड़त कन्दुक पाणि उछारत, चंचल चितहिं चोराय चई रे।
विविध विभूषण अँग-अँग सोहत, पीत वसन चमकाय गई रे।
मधुर-मधुर बोलत संग बालन, हासहिं हेरि हेराय गई रे।
चितवनि चारु सुधा रस पूरित, लोचन ललित लोभाय गई रे।
कल कपोल अरु अधर अरुणिमा, दाड़िम दसन दबाय गई रे।
हर्षण प्रिय पद-पद्म मधुप बनि, अविरल मैं मेड़राय गई रे।

(९३)

सखन सँग नित नित श्री रघुवीर।
राज खेल खेलत बहुँ भाँतिन, जनहित सुखद शरीर।
भ्रात सखन की विजय विलोकत, वितरत मणि धन चीर।
अनुज हार निज जीति निरखि प्रभु, गर गलानि पर पीर।
लखि स्वभाव मुनि देव प्रशंसत, सबहिं मान प्रद थीर।

पुर नर नारि प्राण प्रिय मानत, तनिक ओट दृग नीर।
बन्धु सुहृद सब बलि-बलि जावत, रहत सदा प्रभु तीर।
हर्षण छन वियोग दुख दायक, सहत न नेह अधीर।

(९४)

आज अवधपुर आनँद भारी।
चूड़ा करन महोत्सव नृप गृह, सुभग सुखद सुतचारी।
सोहिल गान बधावा बाजत, गावहिं मंगल नारी।
विप्र वेद विरदावलि बन्दी, सुर जय जयति उचारी।
दान विविध विधि महि सुर पाये, धेनु वसन मणि झारी।
भाँट विदूषक स्वाँग दिखावहिं, नर्तकि नृत्य कला री।
कुंकम केशर इत्र अरगजा, दधि चन्दन सुख कारी।
पुर नर नारि परस्पर छिड़कहिं, हर्षण मगन मना री।

(९५)

कर्ण वेध है आज सखी री।
कौशल्या कैकई सुमित्रा, सुवन लिये भल भ्राज।
गुरु गृह आय कृत्य करवाये, शास्त्र रीति सुख साज।
मंगल गान गाय नव नारी, गिनत स्वकहिं कृत काज।
पंच शब्द धुनि अवधहिं छाई, सुखमय सबहिं समाज।
दान मान द्विज देव पाय बहु, आषिश करत विराज।

परमानन्द मगन पुर लखियत, भौंमा सुख रघुराज।
हर्षण हेरि हृदय सो सुख कहँ, गावत गुण गन गाज।

(९६)

उर उमगत अनुराग अहाहा।
संसकार उपनयन महोत्सव, हर्षत नृप बड़ भाग।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, पितु आयसु लव लाग।
ब्रह्मचारि वर वेष लिए शुचि, गुरु गृह गे सुख पाग।
जाकी सहज श्वास श्रुति चारहु, पढ़न हेतु सो राग।
महा भोज अरु दान महत भो, बजत बधाव सुभाग।
पंच शब्द धुनि गगनहिं छाई, सुनि-सुनि सुख रस जाग।
हर्षण पुर नर नारि मगन है, विहरत आनँद बाग।

(९७)

गुरु सेवन सुख सार समुझि सब भाई।
आत्म अर्पि अनुवृत्ति ग्रहण किय, कपट कुतर्क बिहाई।
प्रीति प्रतीति सुरीतिहिं सेवत, भरि भल भाव भुलाई।
दास धरम दृढ़ समिधा लावत, हर्षि चरावत गाई।
जोगी योग करत जेहिं लागे, रमत जहाँ सुख पाई।
सोई सगुण ब्रह्म रघुनन्दन, गुरु सेवा रत भाई।
दीर्घ दर्शि मुनि हृदय विचारत, शुचि सुख सिन्धु समाई।
हर्षण श्री गुरु गौरव जग कहँ, प्रिय प्रभु प्रगट दिखाई।

(९८)

विद्या विविध वरी ।
अल्प काल रघुवरहिं पहुँचि सब, जीवन सुफल करी।
वेद शास्त्र सब सहजहिं आये, सिगरी कला ढरी।
धनुर्वेद गांधर्वहिं एकी, श्रेष्ठ सु भुवहिं भरी।
कवि योगी वागीश बुद्धि वर, प्रभु सम प्रभुहिं खरी।
नीति प्रीति परमारथ ज्ञाता, स्वारथ साँच सरी।
विनयी वीर शील सुख सागर, कर्म रहस्य चरी।
शम दम सुठि संतोष अहँ बिनु, ज्ञानी हर्ष हरी।

(९९)

राम रहनि रसमय रस वर्षति।
जननि जनक गुरु सुहृद सुभ्राता, पुर परिजन चित कर्षति।
प्रीति पगे सुर नर मुनि नित्यहिं, लखत ललकि हिय हर्षति।
संत शास्त्र श्रुति सोधित सुखमय, मधुर मधुर मधु वर्षति।
चन्द्र कीर्ति सुरसरि सम पावनि, त्रिभुवन हित हठि झरसति।
सरल सुखद शुचि सरस सुहावनि, आनँद सिन्धु लहरसति।
पशु पक्षी भूरुह सुख दायिनि, सुधा सरिस सत सरसति।
हर्षण हृदय हेरि हुलसावनि, प्रिय परमारथ परसति।

(१००)

प्रात काल उठि नित्य कृत्य करि,
मातु पिता गुरु प्रीति प्रणामत भाव भरी।
आयसु मागि करत पुर काजहिं, संत शास्त्र जस नीति।
देखि चरित हर्षति हिय नरपति, पुरजन परिजन मीति।
जेहि विधि सुखी होहि सब कोऊ, सोइ संयोग सुधीति।
प्रभु ब्रह्मण्य साधु सुर सेवी, अतिथ पूज श्रुति रीति।
अति उदार सदगुण के आकर, बोलत बचन विनीति।
रहनि करनि चितवनि मुख मुसकनि, वशीकरनि जग जीति।
नाम रूप लीला धनि धामी, रस झर हर्षण हीति।

(१०१)

अश्व चढ़े आज राम अनुजन सँग सोहैं।
सखा सबहिं सँग लिये, सबहिं सुभग वेष किये,
सबहि बाजि पृष्ट चढ़े, मोदित मन मोहैं।
चढ़े-चढ़े करत केलि, कन्दुक इत उत उझेलि,
टप्प-टप्प चलत हयहु, हिंस रवहि ओहैं।
अवध नारि-नर प्रमोद, निरख खड़े चार कोद,
सुरहु चढ़े नभ विमान, हर्षित हिय जोहैं।
वर्षि सुमन जय उचारि, बढ़वत आनँद अपारि,
भक्ति विवश ब्रह्म प्रगट, हर्षण रस दोहैं।

(१०२)

कौतुक कृपाल हर्षि हेरै।
मल्ल–मल्ल मृग–मृग युग युद्धहिं, शकुनहिं शकुन अभेरै।
हर्ष लहत लखि भ्रात सखन सह, कृपा दृष्टि दृग फेरे।
हास्य रसहिं रघुवर कहुँ रातहिं, भाँड़ विदूषक नेरे।
नट नर्तक बहु स्वांग बनावत, प्रभु प्रसन्न हित हेरे।
हँसहि हँसावहिं जन मन रंजन, मुसकनि फूल बिखेरे।
निरखि लोग सबहीं सुख पावत, राज कुअँर चित देरे।
कहत सुनत अपनो हित हेरहि, हर्षण प्रभु यश तेरे।

(१०३)

रंग भूमि क्रीडत नृप नन्दन।
भ्रात सखा सह स्वयं सुशोभित, वेष सुभग सुख कन्दन।
कलित केलि कमनीय लुभावनि, हिय हारिणि नशि द्वंदन।
इत उत चलनि चतुर चित चोरति, बोलनि शोक निकन्दन।
सिद्ध समूह आय सब ओरहिं, दर्शन करत स्वछन्दन।
स्तुति करि पुनि सुमनहिं वर्षत, शीतल हिय जिमि चन्दन।
पूजित होहिं राम खेलवारी, बिहँसत मधुमय मन्दन।
हर्षण घन छिपि सुरहु विलोकत, कहि जय–जय जग वन्दन।

(१०४)

मज्जन हित हरि सरयू सरि आये।
मन्मथ मोहन मधुमय मोदित, मुख शतचन्द्र लजाये।
निरखि वदन नव नागरि मुर्छित, रहीं सरित जे न्हाये।
चेत पाइ मुग्धा छबि प्रभु की, वरणहिं हिय हुलसाये।
सुनत सुभग दश स्यंदन सुत शुचि, प्रीति परख सरसाये।
निज-निज नयन नारि रखि रामहि, जावहिं भवन भुलाये।
सुख के सुख नयनोत्सव सरबस, रोम-रोम रम काये।
प्रमदा गण मनहरण धवल यश, हर्षण सरित नहाये।

(१०५)

तटनि तट रघुवर करत किलोल।
अनुज सखा सँग दौड़ लगावत, कहुँ चक्कर दै गोल।
मेढ़क सम कहुँ गोता लेवत, तैरत अनुप अतोल।
कमल लिये कर कहुँ जल छिरकत, बालन पै रस घोल।
कबहुँ कमल कन्दुक कल क्रीड़ा, तिन सँग करत अमोल।
भीगे वस्त्र केश भल भींजे, श्याम सुखद दृग लोल।
तरु तर खड़े युवति मन मोहत, बोलत मधुरे बोल।
हर्षण हृदय भाव लखि सबको, वितरत सुख-हिय खोल।

(१०६)

तनिक तो विलोकु अली, आजु जो अनूप रूप,
काम हू ते सौ गुनो सुहायो रे।
आवत दशरथ कुमार, शत्रुंजय गज सवार,
अनुज सखा संग लिये मोहनौ मुहायो रे।
छत्र सिरहिं चमर चलत, क्रीट लखत भानु दबत,
अलकै घुघरारि घनी देखि हौं लुभायो रे।
केशर की खौर भाल, कानन कुण्डल सुहाल,
नयन निरखि मीन मृगहु चित्त में छुभायो रे।
चिक्कन मधुमय कपोल, अधर अमिय मधुर बोल,
हास हृदय हरत हाय हौंहु तो हेरायो रे।
राज कुअँर राह राज, शोभित सुखमय समाज,
भहर-भहर छहर-छहर कहर को मचायो रे।
नयन वंत कौन आहि, परस हेतु ललच नाहिं,
श्याम सुभग सुखद सुधा वर्षि के पियायो रे।
हर्ष अवध वीथि नारि, मन महँ मोदित अपारि,
वर्षि-वर्षि सुमन सेवि, राम को रमायो रे।

(१०७)

राम अहेरी आज बने हैं हो दया के ढरे।
धनुष बाण तूणीर लिये हैं, कटि कसि वीरन वेष धरे।
अनुज सखा सब सँग महँ सोहत, हय गय चढ़ि भल भ्राज अरे।

पावन मृग जिय समुझि-समुझि प्रभु, मारत शर निष्काम खरे।
शाप विमुक्त करत दृग देखत, धाम देत निज शोक हरे।
देव सुमन वरषत गगनोपरि, जय-जय मुख कहि सुखहिं भरे।
दीनबन्धु करुणा वरुणालय, पर पीरा नहिं देख परे।
हर्षण हित कोमल रघुनायक, जन हित मानुष रूप धरे।

(१०८)

बन मृगया प्रभु खेलन जात।
बन्धु सखा संग लिए मुदित मन, वीर वेष पुलकात।
पृष्ट पार्श्व आगे भट रक्षत, चहत सबहिं कुशलात।
आखेट निपुन औरहु जन राजत, हृदय अधिक सर सात।
राम चाप शर लगतहिं वन मृग, धरत दिव्य द्रुत गात।
स्तुति करि निज कथा सुनाई, सुर पुर जात सुभात।
पितु सकास रघुनन्दन वर्णत, वन मृग की बहु बात।
सुनि सुख मानि भूप भल हर्षण, प्यारत सुवन सुहात।

(१०९)

विविध बाटिका वन-वन को विहार।
करत मुदित सुखमय सुखदायक, रघुकुल नव नृप को कुमार।
वन विभूति लखि-लखि सुख पावत, गह्वर कुञ्जन को निहार।
वृक्ष वेलि सर सरित सुझरना, पुष्पित पुष्पन की कतार।
कूंजि बिहंग किलोल मृगा करि, सुख वितरत मन को अपार।

नट नर्तकि भल भाँड़ विदूषक, तहँ निज नैपुन को सम्हार।
गावत गुणि गंधर्व भाव भरि, श्रवण सुखद सबको पियार।
गीत कला कोविद भुवि ऊपर, हर्ष सुनत प्रभु ह्वै सुखार।

(११०)

अवध तीर्थ मन मुदित विहर श्री राम।
सुहृद सखा अनुजन सँग लीन्हे, शोभित पद पय गंग प्रधान।
दान मान दै देवन पूजेव, ऋषि मुनि साधु विप्र सब ठाम।
लखि औदार्य सबहिं सुख पावत, जय-जय जन मन पूरण काम।
श्याम सुभग सुषमा सुख सागर, राज कुअँर अँखियन अभिराम।
गज सवार ह्वै अवधहिं आये, सह समाज कीर्तित गुण ग्राम।
उत्सव भयो नगर नव आनन्द, अनुभव गम्य अनंत ललाम।
हर्षण जननि जनक बड़ भागी, लालत लालन आठहु याम।

(१११)

जाँहि गोप ब्रज कबहुँ रसिक वर।
तमसा गोमति बीच बसत जो, दूध दही रस खानि मधुर तर।
गोपी गोप प्रपूजति सुखमय, नयन विषय बनि बसैं रसहिं झर।
गो रस पाय प्रमुद रघुनन्दन, उत्सव आनंद मचै अमिय भर।
नृत्य गीत करि गोप कुमारी, रिझवैं रसमय राम रसहिं चर।
रामहु रसद सबहिं सुखदायक, देहिं सेवसनि ब्रजहि प्रेम पर।
नयनानन्द दान के दाता, यहि विधि बिहरत वाक बुध्दि वर।
हर्षण कौशल मण्डन मनहर, जड़ चेतन हिय कीन्ह विशद घर।

(११२)

रुचि अनुरूप सवारी सुखमय, शोभित जब तब राम लला।
कबहुँ करिहिं कहुँ हयहिं विराजत, मोहत मनहिं दिखाय कला।
हय-रथ गज-रथ कबहुँ चढ़े पुर, विहरत सबहिं प्रलोभ भला।
कबहुँ विमान कबहुँ नर-यानहिं, चढ़ि-चढ़ि जात अनँद थला।
कबहुँ पयादे पाव पनहियाँ, चलत मनोजहिं मोह तला।
जेहि-जेहि वाहन चढ़ नृपनन्दन, तेहिं-तेहिं भाग अनूप फला।
छवि विलोकि सुर सुमनहिं वर्षत, जय-जय कहत विभोर बला।
हर्षण पुर नर नारि निहारत, होहिं विवश नहिं नयन चला।

(११३)

अश्वन शिक्षत राम कलाविद।
तैसहिं बहु विधि गजन सिखावत, सोहत सुख के धाम।
प्रभु रुख जानि मनहि मन मेली, सोउ सिख लहत ललाम।
निज अनुकूल विचारि कृपानिधि, निरखत नेह प्रधाम।
पाणि फेरि पुचकार दुलारत, लालत ललित अकाम।
सुत की प्रीति अशन अरु भूषण, साजत सुखद सुठाम।
हयहु हरिहिं लखि-लखि सुख मानत, विरह विकल अठयाम।
हर्षण हाय हमहुँ हरि हय है, पाइहौं मन विश्राम।

(११४)

राजिव लोचन राम सबहिं सुखदायक आली।
छबि छहराति चुअति भुँइ झर झर,
चरण कमल कल कोमल पथ पर,
गति गयन्द जित काम, मनहिं मन भावत चाली।
अन्तर-यामी परम पावना, लखि पुरवासिन भाव-भावना,
जात सबहिं के धाम, पहिरि मणि भूषण जाली।
विधि हरि हर सेवित सुख कन्दा, सगुण ब्रह्म मुखजित शत चन्दा,
सुभग सरोरुह श्याम, हरहिं हिय केशन काली।
सबहीं ते लहि-लहि सतकारा, जस जग प्राकृत राज कुमारा,
करति केलि गुण ग्राम, मधुर मधु हर्षण पाली।

(११५)

देखो कुअँर अवधेश आज अलि ऐसो भावै।
मूर्ति मान श्रृँगार, मनहु रस रूप सुहावै।
कोटि काम मद हार, सुखद सुषमा दरशावै।
छवि सागर सुख सार, परम आनँद वरषावै।
रमणी चित को चोर, अटा चढ़ि विहरत भावै।
मधुमय मोहन रूप, अकथ अनुपम दिखरावै।
जड़ चेतन अनुराग, विहँसि हिय माहिं बढ़ावै।
हर्षण मन बुधिपार, सुधा सिन्धुहिं लहरावै।

(११६)

अलि आज अटन आरोहैं।

रामचन्द्र छबि सिन्धु सुधा सम, मुनियन के मन मोहैं।

निरखत नगर निकाई नयनन, बिहरत विबुधहु छोहैं।

वर्षि सुमन जय जयति उचारत, भूल भान भल भोहैं।

अवधपुरी नर नारि बिलोकत, मनहु रूप रस दोहैं।

जन्म कृतारथ समुझि-समुझि के, सुख सनि सिगरे सोहैं।

भाव भरे भल त्रिभुवन वासी, ब्रह्म अगुण दृग जोहैं।

हर्षण हिय में हर्ष प्रभुहिं लगि, प्रेम बिन्दु स्त्रग पोहैं।

(११७)

गुरु मुख सुनत सु शास्त्र पुराणा।

पुरुष पुराण नृपति सुत प्रमुदित, सादर बन्यो अकाम अमाना।

कहत कबहुँ भ्रातन बिच स्वयमहि, वेद शास्त्र मतिवान महाना।

कहुँ वेदान्त-सांख्य अभ्यासी, कबहुँ योग रत दिखत सुजाना।

जग शिक्षण हित व्यवहार करत सो, पर परमार्थ रूप भगवाना।

साधु सभा कहुँ विप्र समाजहिं, राजत राम भाव भल आना।

रंग नाथ मन्दिर कहुँ भ्राजत, प्रेम पगे रस रूप सुहाना।

हर्षण उत्सव कबहुँ बिलोकत, नयन विषय बनि बैठि बिताना।

(११८)

नारिन बीच विराज अली री।

मूर्तिमान श्रृँगार सुखद रस, राज कुअँर चित चोर छली री।

कोटि-कोटि कन्दर्प विमोहन, रसिक मधुप हित कमल कली री।
सुषमा सीम सुभग सुख सागर, हरुअ हँसनि दुख दोष दली री।
चितवनि चारु मधुर मधु बोलनि, हाव भाव वश करनि बली री।
आनँद वर्षि रमावत सब कहँ, रमत स्वयं प्रिय प्रेम पली री।
लोक लाज कुल कानि बिसरि तन, निरखहिं नयनन नारि भली री।
हर्षण हृदय हार रघुनन्दन, नित-नित विहरत नेह गली री।

(११९)

संगीत सुखद आजु गावैं।
ब्रह्म स्वरहिं रस वर्धन रघुवर, वचन पियूष पिआवैं।
वीणा करहिं विराजति अनुपम, अंगुलि स्वरन फिरावैं।
झंकृत नाद श्रवण सुख दायक, सुधा सरिस सरसावैं।
मुरज मृदंग झांझ स्वर मधुरे, वंसी चित्त चोरावै।
गुणि गायक गंधर्व देव पुर, सबहिं सभा छबि छावै।
राग रागिनी तन धरि आई, सादर शीश नवावैं।
यथा राग तैसहिं तँह दृष्यहु, सब कहँ दृग दरसावै।
सुर नर मुनि सुनि सने प्रेम महँ, पशु पक्षिहु भल भावैं।
बिसरि सुधिहिं आनँद सर बूड़े, सात्विक चिन्ह सुहावै।
को हम कहाँ जान नहिं कोई, नृत्यत नेह नहावै।
आनँद-आनँद-आनँद अनुपम, केवल अकथ लखावै।
भुवन श्रेष्ठ गांधर्व कलाविद, राजकुअँर जहँ गावै।
तहँ नहिं अचरज सत्य गुनहु मन, सुनि गुण गण सुख पावै।

धनि-धनि अवधपुरी नर नारी, जड़ चैतन्य जो भावै।
रस मय ब्रह्म विलोचन विषयहिं, हर्षण हेरि जुड़ावै।

(१२०)

शास्त्रन शुचि सिद्धान्त एक प्रभु जानत।
वेद भाष्य भल चरित राम के, चन्द्र कीर्ति मुनि मानत।
शास्त्र धर्म कर्त्ता कारयिता, रक्षक वीर वितानत।
मनहुँ धर्म बनि विग्रह हरि को, अवध भूमि सुख सानत।
सुर नर मुनि गंधर्व प्रशंसत, अरिहु मोद उर आनत।
धर्म सभा बहु पंडित बीचहिं, राम सुतत्व बखानत।
बोध स्वरूप परम विज्ञाता, वर वक्ता सब जानत।
हर्षण विद्या के अभिमानिहु, सिगरो गर्व गमावत।

(१२१)

प्रवचन अनूप आज करत रामचन्द्र सोहैं।
ऋषि मुनि सिद्धन समाज, राव रंक मनुज भ्राज।
तियन सहित सुनत सबै, सुरहु मनहिं मोहैं।
सरस सुखद शान्ति प्रदा, परम तत्व अमिय ह्रदा।
विरति ज्ञान योग रूप, भाषण भल छोहैं।
धेनु वृषभ हय गयन्द, श्रवण देय तजे द्वन्द।
तृण मुख करि नहिं जुगालि, शान्त बने जोहैं।
झिंगुर शकुन शब्द त्याग, जीव जन्तु सकल राग।

सबहिं सुनत प्रेम पगे, अविरल रस दोहैं।
सनकादिक कपिल व्यास, नारद हिय भरि हुलास।
जयति-जयति कहँहि गाय, व्यौमहिं आरोहैं।
त्रिभुवन सुर मुनि मझार, अबलौं अस श्रुति सुखार।
प्रवचन नहिं कतहुँ सुने, यथा राम को हैं।
आनँद-आनँद अपार, रसद बही बृहद धार।
हर्ष हृदय हेरि हुलसि, मनही मन मोहैं।

(१२२)

श्याम सुन्दर भाइन समेत री।
नरपति के ढिग मन मोहि-मोहि, राजत सभा सुन्दर निकेत री।
कबहुँ दान निज कर ते देवै, विप्र याचकन कछुक न हेत री।
प्रजा भेंट स्वीकार करत कहुँ, तिन सुख लागि सप्रेम अजेत री।
सबहिं सुलभ सौशील्य सुधा निधि, जन मन रंजन रघुकुल केत री।
राज नीति शिक्षत कहुँ भ्रातन, सुभग सुखद शास्त्रन मत लेत री।
पशु पक्षी बोली कहुँ बोधत, बन्धु सखा पुरवासिन चेत री।
हर्षण राज काज कहुँ देखत, मिलत कबहुँ प्रिय जनहिं उपेत री।

(१२३)

नयनन लाभ लेहु री सजनी, लाल ललित चित चोरना रे।
लखि-लखि श्रावण सुख सरसावन, झूलत झमकि हिडोरना रे।

मन्द-मन्द वर्षत घन घुमड़त, चलत पवन झक झोरना रे।
गरजि तरजि दिवि चपला चमकति, बहुरि छिपति छल छोरना रे।
कुहू-कुहू धुनि कोयल कूजति, नृत्यत मोरी मोरना रे।
हरित भूमि चहुँ दिशि छबि छावति, सरयू सरित हिलोरना रे।
विपिन प्रमोद रसहिं रस वर्षत, सुर नर मुनिहिं विभोरना रे।
हर्षण हृदय हेरि सुख पावत, अवधपुरी रस बोरना रे।

(१२४)

विजया दशमी उत्सव आयो।
अवध नगर आनन्द राजगृह, क्षत्री कुल छवि छायो।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, महा मुदित मन भायो।
अस्त्र शस्त्र पूजे हिय हर्षत, वीर को वेष बनायो।
गज की किये सवारी शोभित, जन समूह उमड़ायो।
कौतुक साथ सेन सँग लीने, दक्षिण दिशि कहँ आयो।
शमी तरुहि दै मान भेंटि पुनि, अभिनय समर दिखायो।
हर्षण विश्व विजय को डंका, ध्वज पताक फहरायो।

(१२५)

आजु अली दीपावली सोही।
अवध नगर प्रति डगर-डगर महँ, घर-घर मुनि मन मोही।
कृतिम चन्द्र सूरज प्रकाश भल, भ्रम उपजावत जोही।

मनहु गगन ते आय राम पुर, दीप दर्श हित सोही।
राम अनुज सह सखन सुभग तन, निरख अटन आरोही।
सहज प्रकाश परं जो ज्योती, पुर की प्रभा विमोही।
सरयू सरि प्रतिबिम्ब दीप को, जल बिच जग-जग होही।
जनु नभ नखत चन्द तहँ उतरी, डूबि नहात सुसोही।

(१२६)

खेलत बसन्त दशरथ कुमार, सखा सुहृद सँग सोहत अपार।
बाजत डफ डमरु तबल वेणु, सारँगि सितार सोहत सुभीन।
मंजीरा मृदंग झांझ झाल, भावत भल सुषमा सुखद काल।
गावत मधु ते मधु मधुर राग, सरसावत सुख मन मोहि फाग।
मसलत मुख एक एकहिं गुलाल, उड़-उड़ अबीर नभ किय सुलाल।
मारत पिचकारिन बहु सुरंग, करहिं परस्पर सुख कर सुजंग।
देखत सब सुर चढ़ि-चढ़ि विमान, वर्षि पुष्प जय-जय-जय बखान।
हर्षण आनँद बह अवध गैल, योगी जेहिं तरसत मन अमैल।

(१२७)

वर्ष ग्रन्थि प्रतिवर्ष मनावहिं।
श्याम सुखद नव नील मणी की, आनंद अमित अघावहिं।
नृप रानी सह पुरजन परिजन, सुख के सिन्धु समावहिं।
घर-घर सोहिल घर-घर उत्सव, बढ़त प्रमोद बधावहिं।
जन्म समय जस रह्यो महानँद, तथा त्रिलोक दिखावहिं।
नगर व्योम धुनि पंच सुहावति, सुनत श्रवण सरसावहिं।

वर्षत सुमन सुरन सुख फूले, करि स्तुति यश गावहिं।
हर्षण अवधपुरी रस वर्षत, लोकप सकल सिहावहिं।

(१२८)

समय-समय नारद मुनि आवत।
प्रेम पगे श्री सिय यश वर्णत, वीणा वरहिं बजावत।
सुनत राम रसमय रस चरितहिं, नव-नव नेह नहावत।
सविधि मुनिहिं पुनि-पुनि प्रभु पूँछत, सादर सोउ सुनावत।
मिथिला अजिर बिहारिनि हिय महँ, कियो थान मन भावत।
मिलन चाह जागी जिमि कृपणहिं, गई निधी सुधि पावत।
विरह व्याधि वस ब्रह्म अनामय, यद्यपि ताहि छिपावत।
हर्षण हिय की हार हाय कब, लहिहौं स्वप्नहिं गावत।

(१२९)

मिथिला कथा अमिय रस बोर।
ब्रह्म पुत्र स्वर ब्रह्म विभूषित, वीणा वाद्य भनत भल भोर।
सीता सुयश सुभग सुखदायक, पावन गंग समान अथोर।
जनक सुनैना श्री निधि सिद्धिहिं, बतरावत प्रेमिन सिरमौर।
सुनि-सुनि राम रसिक सुख सानहि, मिलन चाह जागति जिय जोर।
पूर्व राग रसमय बहु वर्धत, बिरह वह्नि सुलगत हिय ठौर।
लाज दबावति यद्यपि भावहिं, तदपि प्रगट स्वप्नहिं मुख शोर।
हर्षण छिपति न प्रीति छिपाये, करतहुँ यतनन लाख करोर।

*****

श्री जानकी जन्म बधाई

(१३०)

देव मगन मंगल मिलि गावहिं, हर्ष न हृदय समाई जी।
रानि सुनैना कोष ते प्रगटी, आदि शक्ति छबि छाई जी।
आपन भाग समुझि सुर प्रमुदित, नभहिं निशान बजाई जी।
सुरभित सुमन सुमाल बिखेरत, भूमि को भाग बताई जी।
इत्र अरगजा कुंकुम केशर, बार-बार वर्षाई जी।
चढ़ी विमानन नाचहिं नारी, सिय को मंगल गाई जी।
जय जय जनक जनक की जाया, बोलत सबहिं सुनाई जी।
विबुध समाजहिं पेखि के मिथिला, निज सुख बहुत बढ़ाई जी।
आनँद सिन्धु उमाई के हर्षण, तीनहुँ लोक डुबाई जी।

(१३१)

जनक लली को जन्म जानिके, उमा रमा ब्रह्माणी जी।
सुरन तियन लै मिथिला गवनी, हर्ष न जाय बखानी जी।
सिय दर्शन अभिलाष अतिहिं उर, निज अंशिनि अनुमानी जी।
जन्म महोत्सव देखि भली विधि, लली के रूप लोभानी जी।
करि आरति पुनि लेहिं बलैया, मंगल स्तव ठानी जी।
तिय समाज मिलि मोद मनावहिं, जय जय जयति बखानी जी।
इत्र अरगजा चोवा चंदन, छिड़कहि प्रेम प्रमानी जी।
नृत्य गान करि सोहर गावहि, स्वामिनि सेव सोहानी जी।
हर्षण वाद्य विविध विधि बाजत, पंच धुनि सुख सानी जी।

(१३२)

जन्म लियो लली आई हो, मिथिला बजत बधाई।
जनक सुता के जन्म के पीछे, घर घर कन्या जाई हो।
डगर डगर गृह गृहहि सोहिलो, गावहिं ललित लोगाई हो।
बाँधे बन्दन वार पताका, मणियन चौक पुराई हो।
चित्रित हेम कलश सह दीपन, द्वारे देत देखाई हो।
बजत वाद्य वर नर्तकि नृत्यहिं, स्वांग विदूषक लाई हो।
पढ़हि वेद वर विप्र मुदित मन, बन्दी विरद सुनाई हो।
उड़त अबीर कुंकुमा केशर, दधि की कीच मचाई हो।
हर्षण सुरहु सुमन झरि लावत, दुंदुभि गगन बजाई हो।

(१३३)

आज फिरत पुर खोरिन खोरी।
विधि हरि हर आनंद मगन मन, भूलि स्वधामहिं को री।
जनक लली को जन्म महोत्सव, लखि लखि होत विभोरी।
मिथिला पति को भाग सराहत, नाँच उठत रस बोरी।
सियहिं स्वामिनी आपन जानी, गावत यश सुख सोरी।
साथहिं देव विमानन चढ़ि के, वर्षहिं सुमन अथोरी।
पंच धुनी महि गगन में माची, होत कोलाहल जोरी।
शेष शारदा वरणि सकै नहि, वर्णहि कल्प करोरी।
हर्षण भौमा सुख तहँ छायो, लियो मुनिन चित चोरी।

(१३४)

झुण्ड झुण्ड मिथिला नव नारी, हृदय हर्ष अति भारी।
सजि सजि चली महल की ओरी, रती रमा बलिहारी।
कनक थार भरि मंगल द्रव्यहिं, कनक कलश शिर धारी।
सुन्दर सुखद सोहिलो गावहिं, पिक बयनी सुकुमारी।
पहुँचि ललिहि लखि पूर्ण मनोरथ, सिगरी सुधिहिं बिसारी।
करि निउछावरि आरति कीन्ही, सियहि प्रणमि सब वारी।
नृत्य गान करि सेई सीतहिं, उर भरि भाव अपारी।
रीझि गई नृप नन्दिनि छबि पर, निज निज नयन निहारी।
हर्षण पद न चलत गृह गवनन, परमा प्रीति पसारी।

(१३५)

धनि-धनि मिथिला धाम आज रस वर्षै री।
शुक्ल पक्ष वैसाख सुहावन, नवमी तिथि अभिराम,
सहज सुख सरसै री।
मध्य दिवस अभिजित सुयोग ग्रह, लग्नहु ललित ललाम,
अनुप मुद घर से री।
रानि सुनैना बेटी जाई, अनुपम छबि की धाम,
सबन्ह चित कर्षै री।
व्यौम विमान चढ़े विधि हरि हर, सहित सुरन निज बाम,
पुष्प बहु वर्षै री।

स्तुति करहि जयति जय उचरै, वरणि लली गुण ग्राम,
हेरि हिय हर्षें री।
नृत्यहिं देव वधू कहि सोहिल,प्रेम पगी निष्काम,
वाद्य रस झरसे री।
तैसहि भूमि महोत्सव छायो, हर्षण आठहु याम,
प्रमोदहिं परसे री।

(१३६)

नचहिं देव तिय आज छूम-छूम छना नना।
करि षोडस श्रृँगार नवल तन, भाव भरी भल भ्राज,
झूम-झूम झना नना।
व्योम विमान मधुर स्वर गावहिं, वाद्य विविध विधि बाज,
टूम-टूम टना नना।
भाव भंगिमा गति लय सुख प्रद, करहिं सेव सुख साज,
घूम-घूम घना नना।
सहित शक्ति विधि हरि हर सुर सब, आनँद मगन विराज,
ओम्-ओम् अना नना।
जनक लड़ैती जन्म मनावहि, जय जय पुनि-पुनि गाज,
गूम-गूम गना नना।
वर्षहि सुमन रंग बहु माला, केशर कुंकुम छाज,
भूमि-भूमि भना नना।
हर्षण अवनी गगन एक भो, परमारथ के काज,
दूम-दूम दना नना।

(१३७)

अहा अहा हो आज आनंद बधाई।
रूप रासि सुख मय सिय प्रगटी, आनँद उदधि अनंत अमाई।
मातु सुनयना कोख सुफल भै, त्रिभुवन को सुख वितरि सुहाई।
गृह-गृह बजत बधाव हरषि हिय, चहुँ दिशि सोहिल गीत सुनाई।
विबुध प्रसून झरहिं जय उचरत, पुनि-पुनि सुखद निशान बजाई।
पुरवासी मन मुदितउमगि उर, नृत्यत धनि-धनि लोग लोगाई।
इतर अरगजा चोवा चन्दन, दधि केशर छिरकहिं रस छाई।
हर्षण जननि जनक अरु श्रीनिधि, प्रीति प्रतीति कहै को गाई।

(१३८)

मिथिला बजत बधइया, सबहिं सुख वारि-वारि जावै।
योग लग्न ग्रह वार सुखद सब, तिथिहु पक्ष मधु मइया।
जनक वधू पुत्री भल जायो, कोटि चन्द्र छबि छइया।
त्रिविध वायु सेवत अनुकूली, पंच तत्व सुख दइया।
नाचहिं गावहिं देव वधूटी, सुरहु सुमन बरषइया।
सिद्ध मुनिन मिलि स्तुति सारत, दुंदुभि गगन बजइया।
जय जय जयति जनकजा बोलत, आनंद अमित अघइया।
ललिहिं ललकि लखि अम्ब सुनैना, दीन्ही भान भुलइया।
कुल गुरु सहित लखे मिथिलेशहु, पाये सुख अमितइया।
जात कर्म नान्दी मुख श्राद्धहिं, कीन्हे हिय हर्षइया।

सरवस दान दिये सब काहुहिं, कनक वसन मणि गइया।
अन्न-भूमि-रस-हय-गय-गृह-रथ, कन्या दान दिवइया।
मृग मद केशर कुंकुम चन्दन, बीथिन गन्ध सिंचइया।
कनक थार भरि मंगल द्रव्यहिं, स्वर्ण कलश सिर लइया।
वृन्द-वृन्द नव नागरि प्रविशहिं, भूप भवन भल भइया।
सोहिल गान करहिं पिक बैनी, मुनियन ध्यान छोड़इया।
जनक लली लखि बलि बलि जावै, आरति करहिं सुहइया।
करि निउछावरि निरखि लुभानी, सिगरी सुधि बिसरैया।
आनँद मगन जनक पुर वासी, कहै कौन कवितइया।
हर्ष प्रेम पगि नाचहिं गावहिं, धनि-धनि लोग लोगइया।

(१३९)

डगर डगर प्रति द्वार बधाई बाजि रही।
रानि सुनैना कोख प्रगट भै, ब्रह्म-शक्ति सुख सार।
कनक कलश मणि चौकें पूरी, बाँधे वन्दन वार।
फहरत ध्वजा पताका घर-घर, बाजन बजत दुआर।
सोहिल गाय नचहिं नर नारी, बन्दी बिरद उचार।
विप्र वेद सुर जय-जय बोलत, वर्षहिं सुमन अपार।
इत्र अरगजा कुंकुम केशर, दधि की कीच करार।
हर्षण सर्वस सबहिं लुटावहिं, भाँड़ स्वांग हिय हार।

(१४०)

भैया आज महारस छायो।
प्राणाधिक श्री जनक लड़ैती, कोख सुनैना जायो।

घर–घर सोहिल घर–घर मंगल, ध्वज पताक फहरायो।
मिलि नर नारि परस्पर नाचत, प्रेम के सिन्धु समायो।
उड़त अबीर कुंकुमा केशर, दधि की कीच मचायो।
बिरदी–वेद–निशान–गीत धुनि, जय जयकार सुनायो।
सर्वस दान देत महाराजा, सिगरे कोष खोलायो।
हर्षण आनन्द उमड़ि विलोकहिं, मो कहँ सहित डुबायो।

(१४१)

धनि–धनि भैया मिथिला नगरिया।
सहज ज्ञान वैराग्य योग वश, लोट मुक्ति जहँ डगर डगरिया।
वेद विदित भल भूप ते सेवित, बड़े ब्रह्म विद ज्ञान अगरिया।
सुर नर नाग प्रशंसत अह निशि, बास करन ललचत सुख सरिया।
भूपति नाम सत्य सीरध्वज, भुइँते प्रगटे सिय सुकुमरिया।
गृह–गृह अनँद बधावा बाजत, सुनत श्रवण सुख होत अपरिया।
गगन विमान दुंदुभि देवत, वर्षत सुमन सुरहु झर झरिया।
पंच ध्वनी हर्षण हुलसावन, त्रिजग जीव के हृदय की हरिया।

(१४२)

आज अनुप आनन्द जनकपुर घर घर सोहिल गान ठये।
जनक पाट महिषी के कोखहि, सुता प्रगट भै प्रकृति जये।
शारद शशि शत विजित वरानन, अगम अकथ छबि सिन्धु पये।
सुर किन्नर गंधर्व तियन सह, नभहिं गीत नव नृत्य कये।
वर्षि सुमन जय जनक लली की, कहत निशानन चोट दये।

ऋषि मुनि सिद्ध प्रशंसत सुख भरि, जानि जियहिं जग जननि भये।
ब्रह्मा विष्णु महेश शक्ति सह, सेवत सबहिं समय सुभये।
हर्षण आनँद रानि भूप को, को कवि कहै चतुर चितये।

(१४३)

सोहिल-सोहिल सुखमय आज, सखी सुनु सोहिलो।
रानि सुनैना कोख प्रगट भई, शक्ति सकल सिर ताज।
शत शशि लजवनि श्री मुख आभा, मधुरी हँसनि विराज।
ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति सहित सुर, रचे महोत्सव साज।
वरषत सुमन रंग बहु माला, कहि जय जानकि गाज।
नभ अरु नगर महारस छायो, विविध बाजने बाज।
अतर गुलाल अरगजा छिरकत, पगे प्रेम प्रिय भ्राज।
पुर नर नारि मगन ह्वै नृत्यत, छोड़ि सकल कुल लाज।
गृह-गृह बजत बधाई अनुपम, जस मिथिला महराज।
मागध सूत बन्दि गुण गायक, लहत मनोर्थ समाज।
नृप अरु रानि लहे परमानँद, वारि दियो सब राज।
हर्षण जो सुख भयो जनकपुर, कहत सरस्वति लाज।

(१४४)

त्रिभुवन सोहिल गान, आज चहुँ ओरी हो।
आनँद मगन दिखात, सबहिं बनि भोरी हो।
धनि-धनि रानी भूप, सुयश जग जोरी हो।
ब्रह्म शक्ति बनि पुत्रि, जाहिं रस बोरी हो।

विधि हरि हर सुर सिद्ध, करत जय शोरी हो।
नृत्यहिं देवि विमान, लाज जग छोरी हो।
दुंदुभी बजति प्रसून, झरत दिवि ठौरी हो।
तैसहिं भू महँ भ्राज, पंच धुनि लोरी हो।
दान विविध विधि देत, भूप सिर मौरी हो।
चन्दन चोवा इत्र, छिरक मग दौरी हो।
दधि की कीच मचाय, सबहिं दह बोरी हो।
नाचहिं लोग लुगाइ, प्रेम पथ भोरी हो।
भाँड विदूषक स्वांग, करहिं हँस होरी हो।
आनँद-आनँद छाव, चतुर चित चोरी हो।
जनक लली अनुराग, जाल जग तोरी हो।
हर्षण हर्ष समाय, नस्यो भव घोरी हो।

(१४५)

बजत बधाई सरस सुख सार, गृह-गृह सोहिल सोहै।
रानि सुनैना आनँद वर्धनि, भूप भाग बहु विधि समृद्धनि,
प्रगट सुहाई सिया सुकुमार, रती रमा मन मोहैं।
मातु पिता सुख सिन्धु समाने, सरबस देत खुलाय खजाने,
हय-गय धेनु वसन मणिहार, सुखमय सब कहँ जोहैं।
लक्ष्मी निधि नव नेह विभोरे, अनुजा भाव रसहिं रस बोरे,
लहत हृदय आनन्द अपार, उत्सव सुखहि सुसोहे।
सुर प्रसून वर्षहि नभ तेरे, जय कहि दुंदुभि देत सुखेरे,
नचहिं अप्सरा भाव सम्हार, सेवहिं सिय छवि छोहैं।

तैसहिं भूमि पंच धुनि भाती, दधि केशर छिड़कहिं सुख माती,
लोग लुगाई नचैं सब वार, हर्षण दिवि-रस दोहै।

(१४६)

बधाई देन चलु वारी।
रानि सुनैना बेटी जाई, कोटि शशी सुखकारी।
दधि दूर्वा मंगल द्रव तुलसी, कनक थार मणि झारी।
स्वर्ण कलश सिर सोहिल गावत, पहुँचे राज दुआरी।
घर-घर बन्दन वार बधाई, मणियन चौक प्रसारी।
हिल मिल नृत्य गान करि सजनी, रिझवहिं जनक दुलारी।
बजत बधाव लखहु गगनोपरि, नचहिं विमानन नारी।
हर्षण आनँद यथा जनकपुर, तस नहिं त्रिजग मझारी।

(१४७)

सजनी आज दिवस बड़ भागी।
आदि शक्ति श्री सिय जू प्रकटी, भाग्य भुवन की जागी।
लखहु अकाश विमानन पूरेउ, ज्योति जगामग बागी।
ब्रह्मादिक सिय जू-यश गावत, देव दुंदुभी दागी।
वरषत सुमन ढकेउ मिथिलापुर, शुचि सुवास अनुरागी।
नृप के द्वार बधावा बाजत, नचन अप्सरा लागी।
याचक भीर देखि नृप दीन्हेउ, जेहि की जस रुचि मागी।
हर्षण हैं हमहूँ धनि धन्या, प्रीति सिया संग पागी।

(१४८)

चलो-चलो री सहेली नृप महलन में।
लक्ष्मीनिधि के भगिनि प्रगट भई, छबि श्रृँगार सुख धवलन में।
उमा रमा ब्रह्माणी सुनियत, आइ नची पुर अबलन में।
लै उपहार त्रिदेवहु आये, लहे कृपा सब सबलन में।
ऋषि मुनि वेद उचारत उचरे, आदि शक्तिमन अमलन में।
देश-देश के भूपति आये, लिये भेंट भरि छबलन में।
नभ अरु नगर महानँद छायो, जड़ चेतन नव नवलन में।
हर्षण गगन नचत सुर रवनी, वरष पुष्प लव लवनन में।

(१४९)

कुअँर जी लैहौं गले का हार।
हौं तो ढाढ़िन निमि वंशिनि की, तुम निमि वंश उदार।
निमिकुल छाँड़ि अनत नहिं जाऊँ, धन लखि धनद खुआर।
आज जनक बड़ भागन पायो, सिया सबन्ह सुख सार।
राउर अनुजा सुठि सुखदानी, सब सुकृतन सिंगार।
प्रेमानन्द मगन पुरवासी, लखि-लखि भाग तुम्हार।
सकल देश के राजा आये, लै-लै ढोव अपार।
होन चहैं सिय की सखि दासी, सब नृप सुता सुखार।
भ्रात भगिनि की जय-जय-जय हो, देवहिं नेग हमार।
हर्षण जन्म महोत्सव लखि-लखि, बूड़े प्रेम की धार।

(१५०)

सखि मिथिलेख कुँअर भल भाये।
लाड़िलि सिय को जन्म निरखि के, बजत अनन्द बधाये।
प्रेम उमगि सब धनहिं लुटावत, अहमिति तनु बिसराये।
हर्षण उत्सव के रँग राते, भगिनि भाव छबि छाये।

(१५१)

अहै आज मेरी लली को जनम।
श्रीधर सुते सुनहु प्रिय मोरी, मिटि जै हैं सब जीव भरम।
महा महोत्सव हर्षि मनैये, याही अपनो परम धरम।
मंगलचार गान करवावहु, देहु द्विजन कहँ दान परम।
प्रेम बधाई द्वारे बाजै, सर्व सुखद शुभ शील नरम।
नृत्य वाद्य संगीत माधुरी, झरै अजिर सुख देन चरम।
अतर गुलाल अरगजा सिंचन, मचै कीच दधि प्रीत परम।
प्रेमानन्द डूबि हम दोऊ, अपुहिं खोय हिय हर्ष वरम।

(१५२)

आज सिद्धि सुन्दर अपने गृह, सखियन संग प्रमोद किये।
जनक लली की वर्ष ग्रंथि में, उत्सव भाँति अनेक कये।
विप्र धेनु सुर संत पूजि पुनि, श्रद्धा सह बहु दान दये।
भोरेहिं जाय जगाय ननद कहँ, चूमि कपोलहिं अंक लये।

निज कर ते करि उबटन सिय को, किय अभिषेक विधान मये।
वसन विभूषण अंग अंग साजी, परसति वदन सुनेह नये।
हृदय लाई पुनि भोग पवाई, निजकर कमलनि कवल दये।
आरति करि किय मंगल शासन, लीह्न बलैया बिसरी चये।
हर्षण भाभी प्रेम में पगि कै, सियहुँ सुखी सिधि अंक अये।

(१५३)

लक्ष्मीनिधि उर सुख न समाई जी,
अनुजा वर्ष ग्रंथि शुभ जानि, आनँद मगन न जाय बखानी,
उत्सव धूम मचाई जी।
बन्दनवार पताका फहरत, कनक कलश चित्रित छबि छहरत,
मणियन चौक पुराई जी।
सिद्धि सखिन सह सोहिल गावति, नृत्य वाद्य की माधुरि भावति,
रस ही रस वर्षाई जी।
जनक सुवन मन मुदित विराजत, भाग विभूति रूप छबि छाजत,
अनुजा अंक बिठाई जी।
विविध दान दै विप्रन तोषे, जयति जनकजा इक स्वर घोषे,
मंगल पढ़ मन लाई जी।
अबिर गुलाल ते सोह अकाशा, चोवा चंदन छिरक सुवासा,
दधि की कीच मचाई जी।
हर्षण हर्ष कहै को पारी, वर्षत सुमन सुरन सुख भारी,
द्वार बजत शहनाई जी।

(१५४)

सब विधि सुठि सौभाग्य की सीमा।
आज तिथि धनि शुक्ला नवमी, माधव मास मही मा।।
वर्ष ग्रंथि सिय केरि मनाऊँ, सुनहु प्रिया मम बात।।
उत्सव करहु उमाह हृदय भरि, रस वर्षै दिन रात।।
सुनि पिय बैन सिद्धि सरसानी, पुलकित प्रेम प्रवीर।।
सियहिं बुलाई कीन्ह अभिषेकहिं, किय श्रृँगार सुधीर।।
सिय हित दान विविध विधि दीन्ही, धेनु विभूषण चीरा।।
सोहिल गान नृत्य अरु अभिनय, करवाई सुख सीरा।।
केशर उड़त इत्र बहु वर्षत, अरु सुमननि झरि छाई।।
हर्षण सिद्धि सदन को आनँद, कहै कौन कवि गाई।।

(१५५)

सिद्धि सदन में बजति बधइया अली री।
डफ डमरु अरु ढोल नगारे, झमकि झाँझ सहनइया, अली री।
दधि दूर्वा तुलसी दल अक्षत, कनक के कलश सजइया, थली री।
विप्र वेद विरदावलि बन्दी, जय ध्वनि उचर सोहइया, लली री।
मंगल गीत नारिगण गावहिं, नाचहिं लोग लोगइया, गली री।
अबिर गुलाल के बादल छाये, इत्र वृष्टि वर्षइया, तली री।
लक्ष्मीनिधि अनुजा जन्मोत्सव, देखि देखि सुख छइया, पली री।
विविध भेंट सिय को दै अंकहि, लिये सोह शुचि भइया, बली री।
हर्षण दान मान दै विधिवत, द्रव्य की लूट मचइया, अली री।

(१५६)

जनक लली जू का जन्म बधावा।
बाजि रहेव श्री सिद्धि सदन में, सुर नर मुनि के अति मन भावा।
सुर तिय मुनि तिय कपट वेष में, सोहिल गाय रसहिं रस छावा।
नृत्य अप्सरा भाव बताई, सबके उर अनुराग बढ़ावा।
सुरभित सुमन गगन ते वर्षत, देव विमानन प्रकट दिखावा।
जयति जनक जा सबहिं बोलत, दर्शन करि दृग सफल बनावा।
रंग गुलाल इत्र झरि लागी, चंदन चोवा बहु छिरकावा।
दम्पति दान देत हिय हर्षत, पंच ध्वनि मन मोद बढ़ावा।
हर्षण आनँद उमगि बढेव हैं, धनि धनि डुबत न काहु बचावा।

(१५७)

सुनिबी सिद्धि कुँअरि महरानी जू।
तिहरी ननद सिया को सुन्दर, जन्म दिवस सुख खानी जू।
नाच गाय दै अशिर्वादहिं, लहौं नेग मन मानी जू।
रतनन जड़ी पालकी अनुपम, निज पहिनाव महानी जू।
देहु और जेहि ते तजि याचब, सुख भोगौं बनि रानी जू।
सुनत सिद्धि सादर सनमानी, दियो अधिक अनुमानी जू।
जेहिं लखि धनद सिहावन लागे, सकुचीं शचि अरु बानी जू।
देखि देव वर्षत वर सुमनन, दुंदुभि स्वर सरसानी जू।
हर्षण इतै पंचध्वनि राजति, इतर गुलाल उड़ानी जू।

(१५८)

बाजति अनँद बधैया हो रामा सिद्धि सदन में।
जनक लली जू को जन्म दिवस है, भू नभ एक दिखैया।
विपुल विमान अकाशहिं छाये, सुमन वृष्टि झरि लैया।
पंच धुनि अवनी छबि छाजति, चहल-पहल रव छैया।
दान पाय वर विप्र अशीषत, सुनत सबहिं सुख पैया।
चन्दन इत्र परस्पर छिरकत, धनि धनि लोग लोगैया।
नृत्य गान करि वाद्य बजातव, आनँद उर न अमैया।
हर्षण वे सब धन्य धन्य हैं, जे जे सियजू के भइया।

(१५९)

सिद्धि सदन के द्वारे, बधइया बाजै।
निज ननदी की जन्म तिथी गुनि,
सिद्धि सनी सुख सिन्धुहि में, पुनि सखियन भीर अपारे...
रहीं मनाय लली जन्मोत्सव,
सुख समृद्धि वर्धति अभिनव नव, पंच ध्वनी रस झारे...
कोकिल कंठी सोहिल गावैं,
नृत्यत नवल नारि भल भावैं, सुरतिय लजैं निहारे...
सुरभित सुमन वर्षि सुख सानी,
देव वधू जय जयति बखानी, सिद्धि भाग सुख सारे...
उड़त अबीर कुमकुमा केशर,
इत्र अरगजा वर्षत झर झर, दधि की कीच करारे...

वसन विभूषण माणिक हीरा,
लुटत आज कहि जाय न भीरा, समय सुहावन पा रे...
हर्षण भाँड विदूषक भावै,
स्वाँग करत बहु नेग को पावै, आनँद आनँद आ रे...

(१६०)

आज सिया जू को सोहिल गायो।
तिनके वर्ष ग्रंथि को उत्सव,
मच्यो सिद्धि सदननि भल भायो।
नौबति बाजति तन पुलकावति,
अवनि अकाश रसहिं रस छायो।
वर्षत रंग पुष्प बहु माला,
जय जय कहि सुर दुंदुभी बजायो।
नचहिं अपसरा भाव बतावहिं,
भाँड विदूषक स्वाँगहि लायो।
इत्र अरगजा चोवा चन्दन,
छिरकि परस्पर अनँद मचायो।
लक्ष्मीनिधि बहु दान देत हैं,
याचक गण अतिशय सुख पायो।
हर्षण भइया भावहि लखि लखि,
सिय हिय अति आनँद आयो।

(१६१)

ऐसी नारि नवीनी अहो री अनत ते आई ।
उमा रमा शारद शचि साँची, सुन्दरि सुखद सुभीनी।
देन बधाई जनक लली की, आई परम प्रवीनी।
मंगल द्रव्य लिए मणि थारी, सोहिल सुख मति भीनी।
निउछावरि करि आरति कीन्ही, लली चरण सिर दीनी।
रक्षा पाठ पढ़ी पुनि मंगल, नृत्य गान कल कीनी।
निरखि सियहिं सबही सुख पाई, मुद्रा किये अधीनी।
जानहु जियहि सखी सत बतियाँ, देखतहिं भई विलीनी।

(१६२)

बाजै-बाजै हो बधइया अमिय रस बोर।
जनक लली जू प्रकट भई हैं, त्रिभुवन आनँद आज लई है,
सुख को सिन्धु उमड़ चहुँ ओर।
लक्ष्मी निधि नव नेह समाये, देह गेह सब सुधिहिं भुलाये,
सरबस दान दियो बिनु मोर।
सहृद सखा सह उत्सव सरसत, राते रोम-रोम रस वर्षत,
लखि-लखि तिहुँ जग होत विभोर।
दधि केशर चन्दन अरु इत्रा, छिड़क परस्पर परम पवित्रा,
अबिर गुलाल गगन भुँइ जोर।
सोहिल गान करहिं पुरनारी, विप्र बंदि श्रुति विरद उचारी,
वर्षि सुमन सुर जय-जय शोर।

भू-नभ नवल कोलाहल छायो, विधि हरि हर निज नगर भुलायो,
वेष छिपाय फिरत पुर खोर।
आनँद अवधि जनक की बेटी, सबहिं देति सुख सिन्धु समेटी,
हर्षण हर्षहिं हृदय हिलोर।

(१६३)

निमि पुर बजत बधाव सरस सुखदाई।
लै-लै ढोव नृपति बहु आये, बहु विधि किये बनाव कहै को गाई।
वृन्द-वृन्द मिलि नारि नवेली, तीन लोक ते आव सबहिं छबि छाई।
कनक थार कर कलश सिरहिं धरि, सोहिल मृदु स्वर गावपिकहिंलजवाई।
भूषण वसन सजी गज गामिनि, नूपुर शब्द सुहाव मुनिहुँ मन लाई।
गायक गुणि गंधर्व बन्दि नट, भाँड विदूषक छाव जगत यश पाई।
निज-निज कला दिखावहिं सिगरे, पावहि सब मन भाव हर्षबहु ताई।
हर्षण पंच धुनी दिन राती, सरबस सबहिं लुटाव सबहिं चितचाई।

(१६४)

सजनी आज छठी तिथि आई।
जनक लड़ैती छह दिन भैंले, पूजहु देवि मोहाई।
आनन्द वर्धक वाद्यहु बाजै, जन-जन को सुखदाई।
हर्षण सुखद सोहिलो गावहु, प्रीति रीति रँग छाई।

(१६५)

छठी आज भल भाय, पुरोहित आय, परम सुख पाय, सुकृत्य करायो हो।
वेद विरद धुनि छाय, जयति जय गाय, सुरहु सरसाय, सुमन वरषायो हो।
बाहर बजत बधाव, श्रवण सुख दाव, मुनिहहु मन भाव, हियहिं हरषायो हो।
धेनु वसन मणिमाल, दिये भूपाल, सबहिं सुख शाल, भूरि भल भायो हो।
उत्सव विविध प्रकार, कहे को पार, मुनिन मन हार, भयो छबि छायो हो।
वर्षत इत्र गुलाल, सुचन्दन भाल, दधिहु तन डाल, जनन समुदायो हो।
नगर नारि नर नाँच, भूलि सुधि साँच, प्रेम पथ राँच, रसहिं रस प्यायो हो।
हर्षण हर्ष अपार, सुखन सुखसार, वढ़ी रस धार, त्रिलोक नहायो हो।

(१६६)

आजु सुनैना सोह भली।
लली अंक लै राजति रस भरि, मनहु सुकृत सुख रूप फली।
बरहौं उत्सव जानि शतानँद, कृत्य करायो मोद थली।
सीता नाम सुभग सुख दायक, दीन्हे कहि जय जनक लली।
महा भोज करवाय भूमि पति, दान दिये बहु प्रीति पली।
नभ अरु नगर बधावा बाजत, सुख की सरिता उमँगि चली।
नचि-नचि सबहिं सोहिलो गावहिं, पुरी-व्योम महँ अमित अली।
हर्षण हर्ष त्रिजग करि एकहिं, बहत वृहद रस गली-गली।

(१६७)

बलि जाऊँ लली छबि बाल की।
नील झिगुलि तन में अति राजति, घन दामिनि द्युति जाल की।

मूरति मधुर पालने विलसति, मनहु बनी शशि सार की।
पद अंगुष्ठ कबहु मुख लावति, कह शोभा किलकार की।
सादर बैठि झुलावति माता, हँसनि मधुर रस खानि की।
कबहुँक जननि जोहि जनकजा, चहत अंक विलसान की।
कहुँ प्रतिबिम्ब निरखि छबि अपनी, पाणि ते पकड़ति जानकी।
हर्षण निरखि पालनो झूलन, भूलि गयो सुधि आन की।

(१६८)

सोहती सिय सुभग पलना।
शत-शत इन्दु लजत लखि आनन, छावती छबि भली भलना।
कनक जटित निलिया तन राजति, मोहती मन मुदित ललना।
रसि-रसि मातु झुलावति सुख सनि, लालती लखि नयन चलना।
नजर लगै कहुँ संशय आनति, मूँदति दृग नेह फलना।
रहि न जात पुनि लली लखे बिनु, देखती मन मोहि हलना।
प्रीति दशा अट पट अविकारी, भावती भव पार तलना।
हर्षण अम्ब सुनैना धनि-धनि, पागती प्रिय पुत्रि पलना।

(१६९)

पलना परम रुचिर सखि देखु।
शोभा सदन सुखद चित चोरत, वरणि सकै नहिं शेषु।
अरुण पीत सित श्याम मणिन मय, कनक जटित प्रिय पेखु।
मनहु मार निज पाणि बनायो, सिय हित भागहिं लेखु।
भाँति-भाँति कल क्रीड़न साजहु, सजेउ विहँग विहँगेशु।

पवन प्रसंग शकुन करि कलरव, वर्षत सियहिं अशेषु।
जेहि विलोकि विधि हरि हर अचरज, लावत हठि हिय रेखु।
हर्षण सिया ताहि पै पौढ़ति, अकथ अनूपम वेषु।

(१७०)

सुखहिं सनी निमिपुर नृप रनिया।
प्राणन प्राण पुत्रि को प्रमुदित, स्वकर झुलावति मनहिं मोहनिया।
कबहुँ परसि चुम्बति मल्हरावति, कहति कछुक कहुँ हेरि हँसनिया।
लखतहुँ ललिहिं ललकि अवलोकति, बूड़ि-बूड़ि सुख सिन्धु सोहनिया।
सियहुँ स्व अम्बहिं लखि-लखि किलकति, उछरति पलना पौढ़ि लोभनिया।
चन्द्र वदनि अमृत झर मातहिं, प्रमुदि पियावति नयन नेहनिया।
जनु जननी की प्रीति पुरानी, प्रगट करति शुचि सैन सुजनिया।
हर्षण हर्ष कहै को पारी, त्रिभुवन भन्यो सबहिं सुख दनिया।

(१७१)

जनक लली के भाल डिठौना।
मधुर-मधुर मृदु मंजुल शोभित, ज्यो मृगाङ्क मृग चिन्ह सलोना।
चिलकत चिकुर शीश गभुआरे, विलसत नागिन के जिमि छौना।
किलकि लली अंबहि अवलोकति, करपद पटकति उछरि अयोना।
सुख सुषमा श्रृँगार सुमूरति, पलना परी मधुर रस भौना।
जननी राई लोन उतारति, भय भरि कोउ करि देय न टोना।
मधुर भाव भावित सुख सिन्धुहि, बूड़ी वाछल प्रेम अहोना।
डीठहिं डरति विवश ह्वै हर्षण, पीवति रूप रसहिं दृग दोना।

(१७२)

मातु मल्हावति पलना झुलावति सियहिं सोवावति प्रेम पसारी।
शशि शत सुन्दर वदन विलोकी, नव-नव नेह रुके नहिं रोकी,
लोचन नीरा पुलक शरीरा, प्रेम प्रवीरा सुधिहिं बिसारी।
बहुरि धीर धरि गावति लोरी, आ-आ री निंदिया तू सुख बोरी,
सियहिं सोवाई भाव भुलाई, करु सेवकाई सुखद सम्हारी।
मधुर-मधुर भल भोजन दैहौं, समय-समय पुनि तोहिं बुलैहौं,
लाड़िली परशी आनँद बर्षी, बनि सुख घरसी जगत मझारी।
कहुँ कर कोमल थप-थप कारी, सुभग शरीर सिया के प्यारी,
सोवे-सौवे कहि रस मोवै, पुनि दृग जोवै हर्षण हारी।

(१७३)

पलना सोई आनँद मोई शाँति सँजोई सिय सुकुमरिया।
सोवत जानि जननि सुख पागी, समय समुझि गृह कृत्यहिं लागी,
श्रीनिधि आये भैया भाये, नेह नहाये सिय सुख हेरिया॥
सोई समुझि बैठ रस छाकी, अनुजा सुख निज सुख सत ताकी,
सिया सोहानी शोभा खानी, निरख लुभानी नयन पुतरिया॥
कछुक काल जागी नृप लाली, रोय उठी यद्यपि सुख शाली,
लखि निज भैया अति सुख छैया, करि किलकैया उछरि उछरिया॥
लक्ष्मी निधि हिय अति पुलकाये, नव-नव प्रेम प्रवाह समाये,
क्रीड़न साजा सिय सुख काजा, दै भल भ्राजा अनुप अगरिया॥

लै निज अंक चूमि मुख प्यारो, हृदय लगाय सहज सुख सारो,
सर्वस वारी हर्षण हारी, प्राण पियारी भगिनि दुलरिया॥

(१७४)

मधुर मुख किलकैं सुखद सिया की।
लोनी ललित अमिय रस बोरी, शशिकर निकर क्रिया की,
कलित कल चिलकैं॥
नव-नव निमिपुर नित्य नवेली, भीर त्रिलोक तिया की,
लखन ललि ललकैं॥
शारद शशि शत लखि-लखि आनन, बनहिं विभोर हिया की,
गिरैं नहिं पलकैं॥
शची शारदा रती रमोमा, सेव सनेह धिया की,
हरषि हिय हलकैं॥
पलना पौढ़ि करति शिशु केली, प्राणन प्राण प्रिया की,
लखत जिउ छलकै॥
जेहि दिशि देखि करति किलकारी, सुख सरसाय जिया की,
धन्य गुनि झलकै॥
हर्षण निरखि पालने झाँकी, जनक राय बिटिया की,
प्रीति पगि पुलकै॥

(१७५)

सिय सुखद मोरी भ्राज पलना।
विधि हरि हरहु नहिं अंत पायो, लौटि लागी लाज।

शक्ति अचिंत्य अनादि अपरमित, नेति कहि श्रुति गाज।
उद्भव थितिलय लीला जाकी, जगत रूपी राज।
सोइ मिथिला बनि जनक बालिका, भक्ति भावन काज।
विहँसति पलना परी मधुर मधु, वर्षि सुख की साज।
धनि-धनि मातु सुनैना सुखमय, भुवन तिय सिर ताज।
हर्षण हृदय हेरि हुलसायो, सियहिं लखि-लखि आज।

(१७६)

सरसि सुनैना तेल लगावति।
सिय तन सुभग प्राण प्रिय हरुये, परिस-परसि सुख सिन्धु समावति।
लखि-लखि ललिहिं अतृप्त अनन्दी, नवल नेह नव नीर नहावति।
अजिर रुचिर पलना पौढ़ाई, धूप देइ तन पुष्ट बनावति।
देखहिं देवी देव गगन ते, सुमन वरषि जननी जय गावति।
जो सुख देबि त्रिदेविन दुर्लभ, सो सुख सतत सुलोचनि पावति।
भक्ति भूरुहहिं सींचि सिया फल, पाइ परम रस अदति अघावति।
हर्षणहू हिय हर्ष विभोरत, अह निशि अम्ब कृपा धिय ध्यावति।

(१७७)

अन्न प्रासन आज माई।
निमि नगर नव आनन्द छायो, गृह-गृह बज बधाई।
दान मान दै विप्रन पूज्यो, भोजन भल जिवाई।
सिय मुख मातु मधुर मधु अन्नहिं, दियो सुख न समाई।